श्री गणेशाय नमः

श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

(भाषाटीका सहितम्)

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥

जिनके सुमिरन मात्र से जीव जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। जो सर्वसमर्थ और सर्वव्यापी हैं, उन भगवान विष्णु को नमस्कार है।

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत॥१॥

वैशम्पायनजी बोले–सभी पुनीत धर्मों को शांतनु-पुत्र भीष्म पितामह से भली प्रकार सुनकर युधिष्ठिर ने पुनः पूछा।

युधिष्ठिर पपृच्छ

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम्॥२॥

युधिष्ठिर ने पूछा–इस सृष्टि में सभी फलों के दाता, सर्वपूज्य देव कौन हैं? अथवा प्राप्त करने योग्य सर्वोत्तम कौन हैं? किसकी वन्दना व पूजा से जीव इहलोक व परलोक में श्रेष्ठ फल पाता है?

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्॥३॥

सभी धर्मों में कौन-सा धर्म सर्वश्रेष्ठ है तथा किसका जप करते हुए प्राणी जन्म रूपी सागर के बंधन से मुक्त होता है?

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥४॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्तयां पुरुषं व्ययम्।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च॥५॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्॥६॥

भीष्म पितामह बोले–प्राणी जागकर जगत के पति, देवों के देव अनन्त, पुरुषोत्तम की हजार नामों से स्तुति करता हुआ, भक्तिपूर्वक उन्हीं देव का नित्य अर्चन, स्तुति, ध्यान, भजन, वन्दना करता हुआ तीनों प्रकार के तापों (दैहिक, दैविक, भौतिक) से मुक्त हो जाता है।

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्॥७॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैर्चेन्नरः सदा॥८॥
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम्॥९॥

जो ब्रह्मनिष्ठ हैं, सभी धर्मों के ज्ञाता हैं, प्राणियों की यशवृद्धि करनेवाले, सृष्टि के स्वामी, सर्वदेश हैं व समस्त जीवों की उत्पत्ति के कारण हैं।

संपूर्ण धर्मों में यह धर्म है कि श्रेष्ठ प्राणी भगवान विष्णु का पूजन करें। जो श्रेष्ठ, तेज व ऐश्वर्य रूप हैं, जो सत्य रूप से पूजने योग्य ब्रह्म हैं, जो परम निष्ठ तथा मोक्षरूप हैं।

पवित्राणां पवित्रं यो मंगलानां च मंगलम्।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता॥१०॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये॥११॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपतेः।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम्॥१२॥

जो पवित्रों में पवित्र, भव्यों में भव्य, देवों में परम देव, जीवों में अव्यय पिता हैं। कल्पारम्भ में समस्त जीव जिनसे प्रकट होते हैं और कल्पांत में पुनः उन्हीं में विलीन हो जाते हैं। हे नृप! जगत के स्वामी और सृष्टि प्रमुख उन भगवान विष्णु के पाप व भयनाशक सहस्रनाम को मुझसे सुन!

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये॥१३॥

उन महात्मा के गुण, कर्म के अनुसार जो नाम हैं अथवा जिनके अपरोक्ष व परोक्ष, प्रसिद्ध व ऋषि-मुनियों द्वारा गाए गए नाम हैं, उनको मैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लाभार्थ कहता हूं।

अथ स्तोत्रम्

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥१॥

विश्वम्: जो सृष्टि के कारणभूत हैं। **विष्णुः** जो सबमें व्याप्त हैं। **वषटकार:** जो यज्ञरूप हैं। **भूतभव्यभवत्प्रभु:** जो तीनों कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) के सुखभोग से युक्त हैं। **भूतकृतः** जो रजो व तमो गुण के आधार पर सृष्टि की संरचना व संहार करनेवाले ब्रह्मा व रुद्ररूप हैं। **भूतभृत:** जो सतोगुण से सृष्टि के धारक व पोषणकर्ता 'विष्णु रूप' हैं। **भाव:** जो भावरूप हैं। **भूतात्मा:** जो जीवों के हृदय में आत्मरूप से रहते हैं। **भूतभावन:** जो जीवों के उत्पत्तिकर्ता हैं।

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परम गतिः।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च॥२॥

पूतात्मा: जो पवित्र आत्मरूप हैं। **परमात्मा:** जो मुक्त स्वभाव से युक्त हैं। **मुक्तानां परमगति:** जो संसार बंधन से मुक्त हैं, जीवों के लिए जो अंतिम आश्रय हैं। **अव्यय:** जो अविनाशी हैं। **पुरुष:** जो पुरुष रूप हैं अर्थात सृष्टि के क्रियाकलापों के साक्षी रूप हैं। **क्षेत्रज्ञ:** जो शरीर के ज्ञाता हैं। **अक्षर:** जिनका कभी क्षय अर्थात नाश नहीं होता है अथवा जो अक्षर (ब्रह्म) रूप हैं।

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
नरसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः॥३॥

योग: जो योग रूप हैं अर्थात जो ज्ञान-इन्द्रिय व मन से जीवात्मा-परमात्मा में समान भाव रखते हैं। **योगविदां नेता:** जो योग को जाननेवालों में श्रेष्ठ योगी हैं। **प्रधानपुरुषेश्वर:** जो प्रकृति व पुरुष के स्वामी हैं। **नरसिंहवपु:** जो मनुष्यों में सिंह रूप हैं। **श्रीमान:** जो लक्ष्मी से संपन्न हैं। **केशव:** जो सुन्दर केशधारी हैं अथवा जिन्होंने 'केशी' नामक दैत्य का वध किया था। तभी से उनका नाम 'केशव' पड़ा। **पुरुषोत्तम:** जो पुरुषों में श्रेष्ठ हैं अथवा जो शुद्ध ब्रह्म स्वरूप हैं।

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥४॥

सर्व: जो सत्यासत्य के रचयिता, पालक व नाशनहारी हैं। **शर्व:** कल्पांत में जो सृष्टि का अंत करनेवाले हैं। **शिव:** जो कल्याणरूप हैं। **स्थाणु:** जो सदैव स्थिर भाव से सृष्टि में विद्यमान हैं। **भूतादि:** जो जीवों के उत्पत्तिकारक हैं। **निधिरव्यय:** जो अक्षय निधि हैं। **संभव:** जो प्रत्येक काल (युग) में अवतरित होते हैं। **भावन:** जो सभी जीवों को फल प्रदान करनेवाले हैं। **भर्त्ता:** जो सृष्टि के पोषणकर्ता हैं। **प्रभव:** जिनसे जगत की उत्पत्ति होती है। **प्रभु:** जो सर्वसमर्थ हैं। **ईश्वर:** जो सबके स्वामी हैं।

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥५॥

स्वयम्भू: जो स्वयमेव प्रकट होते हैं। **शम्भु:** भक्तों के लिए जो सुखरूप हैं। **आदित्य:** जो सूर्य के समान हैं अथवा जो देवमाता अदित के पुत्र रूप हैं। **पुष्कराक्ष:** जो कमल के समान नेत्रोंवाले हैं। **महास्वन:** जो महान वेदरूप शब्द करनेवाले हैं। **अनादिनिधन:** जो जन्म-मरण से रहित हैं। **धाता:** जो अनन्तरूप से जगत के धारणकर्ता हैं। **विधाता:** जो जगत के जीवों के लिए कर्म-फल के निर्धारक हैं। **धातुरुत्तम:** जो ब्रह्म से भी श्रेष्ठ हैं।

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः॥६॥

अप्रमेय: जो ज्ञान के विषय नहीं हैं। **हृषीकेश:** जिन्होंने इंद्रियों को

वशीभूत कर रखा है। **पद्मनाभ**: जिनकी नाभि में जगतोत्पत्ति का कारण रूप कमल है। **अमर प्रभु**: जो देवों के भी देव हैं। **विश्वकर्मा**: जो जगत के क्रियारूप हैं अर्थात ऊंच-नीच कर्म के कर्ता हैं। **मनु**: जो मननशील हैं। **त्वष्ट**: प्रलयकाल में जो सृष्टि को सूक्ष्म रूप कर देते हैं। **स्थविष्ठ**: जो अत्यधिक स्थूल हैं। **स्थविरोध्रुव**: जो विकारहीन और स्थिर हैं।

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम्॥७॥

अग्राह्य: जो शब्द और मन से ग्रहणीय नहीं हैं। **शाश्वत**: जो तीनों कालों में स्थिर रहनेवाले हैं। **कृष्ण**: जो कर्षण अर्थात आकृष्ट करने का गुण होने के कारण 'कृष्ण' हैं। **लोहिताक्ष**: जिनके नेत्र लालिमायुक्त हैं। **प्रतर्दन**: जो प्रलयकाल में जीवों का नाश करनेवाले हैं। **प्रभूतस्त्रिककुब्धाम**: जो ज्ञान रूपी ऐश्वर्य से संयुक्त हैं और तीनों दिशाओं (ऊर्ध्व, मध्य, अधः) के तेजरूप धाम हैं। **पवित्रम**: जो पवित्र करनेवाले हैं। **मंगलम् परम**: जो समस्त शुभों में श्रेष्ठ हैं।

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥८॥

ईशान: जो समस्त प्राणियों के स्वामी हैं। **प्राणद**: जो प्राणों के दाता हैं। **प्राण**: जो जीवों के प्राणरूप हैं। **ज्येष्ठ**: जो आदिकारण होने से सबसे बड़े हैं। **श्रेष्ठ**: जो उत्तम हैं। **प्रजापति**: जो प्रजापति रूप हैं।

हिरण्यगर्भ: जो सुवर्णमय अण्ड के भीतर निवास करनेवाले हैं अथवा जो ब्रह्म रूप हैं। **भूगर्भ**: जिनके गर्भ में पृथ्वी निहित है। **माधव**: जो लक्ष्मी के स्वामी हैं। **मधुसूदन**: 'मधु' नामक राक्षस का वध करने के कारण जो 'मधुसूदन' कहलाते हैं।

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवानः॥९॥

ईश्वर: जो सर्वशक्तिमान हैं। **विक्रमी**: जो पराक्रमी हैं। **धन्वी**: जो 'शारंग' नामक धनुष को धारण किए रहते हैं। **मेधावी**: जो बुद्धिमान हैं। **विक्रम**: जिनका वाहन गरुड़ है। **क्रम**: जो वामन रूप धारण कर विराट रूप से सृष्टि को नापनेवाले हैं। **अनुत्तम**: जो सर्वश्रेष्ठ हैं। **दुराधर्ष**: जो शत्रुओं को वशीभूत कर लेते हैं। **कृतज्ञ**: जो पाप-पुण्य कर्मों के जानकार हैं। **कृति**: जो प्रयत्न रूप हैं। **आत्मवान**: जो सदैव स्वयं में ही एक भाव से रहते हैं।

सुरेशः शरणं शमः विश्वरेताः प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥१०॥

सुरेश: जो देवों के देव हैं। **शरणम् शम**: जो शरण में आए भक्तों के दुखों का नाश करनेवाले हैं। **विश्वरेता**: जो विश्व के कारण रूप हैं। **प्रजाभव**: जो प्रजा के उत्पत्तिस्थल हैं। **अहः**: जो ज्योतिस्वरूप हैं। **संवत्सर**: जो संवत्सर रूप हैं। **व्याल**: जो हाथी व सांप के समान कभी भी पकड़ में न आनेवाले हैं। **प्रत्यय**: जो ज्ञानरूप हैं। **सर्वदर्शन**: जो समस्त सृष्टि को समान भाव से देखते हैं।

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिर्सृतः॥११॥

अज: जिनका जन्म नहीं होता है। **सर्वेश्वर**: जो सबके स्वामी हैं। **सिद्धः** जो सिद्धरूप हैं। **सिद्धिः** जो चैतन्य रूप हैं। **सर्वादिः** जो सभी जीवों के उत्पत्ति रूप हैं। **अच्युत**: जो स्थिर रूप हैं। **वृषाकपिः** जो धर्मरूप वाराह हैं। **अमेयात्मा**: जो यथार्थ ज्ञान के विषय नहीं हैं। **सर्वयोगविनिर्सृत**: जो सब प्रकार के योग-संबंधों से परे हैं।

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥१२॥

वसु: जो सभी जीवों में समान भाव से व्याप्त हैं। **वसुमना**: जो पवित्र मनवाले हैं। **सत्यः** जो सत्य रूप हैं। **समात्मा**: जो एकात्म रूप हैं। **सम्मित**: जो शास्त्रसम्मत हैं। **असम्मित**: शास्त्रों द्वारा जिनका वास्तविक ज्ञान नहीं हो सकता। **सम**: जो विकार रहित हैं। **अमोघ**: जो सत्य संकल्प रूप हैं। **पुण्डरीकाक्ष**: जिनके नेत्र कमल के समान हैं। **वृषकर्मा**: जो धर्म-कर्मकर्ता हैं। **वृषाकृतिः** जो धर्मावतारी हैं।

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥१३॥

रुद्रः प्रलयकाल में जो रुद्र रूप बन जाते हैं। **बहुशिरा**: जो अनेक

सिरवाले हैं। **बभ्रु:** जो सभी लोगों के पालन-पोषणकर्ता हैं। **विश्वयोनि:** जो सृष्टि उत्पत्ति के कारण रूप हैं। **शुचिश्रवा:** जो सद् विषय (पवित्र विषय) का श्रवण करनेवाले हैं। **अमृत:** जो अमर हैं। **शाश्वतस्थाणु:** जो सब कालों में विद्यमान रहते हैं। **वरारोह:** जो वरण करने योग्य हैं अथवा जो ग्रहणीय हैं। **महातपा:** जो महान तपस्वी हैं या जिन्हें सृष्टि के विषय में संपूर्ण ज्ञान हे।

सर्वग: सर्वविद्भानुविष्वक्सेनो जनार्दन:।
वेदो वेदविदाव्यंगो वेदांगो वेदवित्कवि:॥१४॥

सर्वग: जो सभी जगहों पर आ-जा सकते हैं। **सर्वविद्भानु:** जो सबको जाननेवाले हैं तथा जो अपने सत्य स्वरूप से दैदीप्यमान हैं। **विष्वक्सेन:** जिनकी सेना ने एक बार जरासंध राक्षस की सेना को घेर लिया था। **जनार्दन:** जो दुष्ट प्रकृति के लोगों का संहार करनेवाले हैं। **वेद:** जो तत्त्व ज्ञान (आत्मा) के ज्ञाता हैं। **वेदवित:** जो वेद के अर्थ व पाठ के मर्मज्ञ हैं। **अव्यंग:** जो वेद पुराण रूपी अंगों से पूर्ण हैं। **वेदांग:** जिनके सामने चारों वेद (अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद, ऋग्वेद) पार्षद बनकर स्थिर रहते हैं। **वेदवित:** जिन्होंने सांदीपनी गुरु से वेदों का ज्ञान प्राप्त किया है। **कवि:** जो कविरूप हैं।

लोकाध्यक्ष: सुराध्यक्षो धर्माध्यक्ष: कृताकृत:।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुज:॥१५॥

लोकाध्यक्ष: जो सभी लोकों के स्वामी हैं। **सुराध्यक्ष:** जो देवताओं के प्रमुख हैं। **धर्माध्यक्ष:** जो धर्म के अधिपति हैं। **कृताकृत:** जो जगत् के कार्यकारण रूप हैं। **चतुरात्मा:** जो पृथक-पृथक कालों में स्वरूप धारण करनेवाले हैं। **चतुर्व्यूह:** जो चार रूपों (वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध व संकर्षण), सृष्टि की रचना करनेवाले हैं। **चतुर्दंष्ट्र:** नृसिंह रूप से जो चार दंत धारण करनेवाले हैं। **चतुर्भुज:** जो चार भुजाओं वाले हैं।

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिज:।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनि: पुनर्वसु:॥१६॥

भ्राजिष्णु: जो प्रकाशरूप हैं। **भोजनम्:** जो भोजनरूप हैं। **भोक्ता:** जो भोग्यरूप हैं। **सहिष्णु:** जो सहनशील हैं। **असहिष्णु:** जो अपने प्रियजनों के कष्टों को सहन नहीं करते। **जगदादिज:** जो जगत् के आदिकारक हैं। **अनघ:** जो पापरहित हैं। **विजय:** जो ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्यादि को भी जीतनेवाले हैं। **जेता:** जो विष्णुरूप हैं। **विश्वयोनि:** जो कार्य-कारणरूप हैं। **पुनर्वसु:** जो युगों के अनुरूप मनुष्य रूप धारण करते हैं।

उपेन्द्रो वामन: प्रांशुरमोघ: शुचिरूर्जित:।
अतीन्द्र: संग्रह सर्गोधृतात्मा नियमो यम:॥१७॥

उपेन्द्र: कृष्णावतार में जिन्होंने इन्द्र के मान-मर्दन के लिए गोवर्द्धन पर्वत को धारण किया था। तभी से उनका एक नाम उपेन्द्र भी पड़ा। **वामन:** जिन्होंने वामन रूप धारण कर बलि से तीन पग जमीन की

याचना की थी। **प्रांशु:** जिन्होंने विराटरूप धारण कर तीनों लोकों (पृथ्वी, पाताल, आकाश) को अपने पैरों से माप लिया था। **अमोघ:** जो कभी भी व्यय नहीं होनेवाले हैं अर्थात अविनाशी हैं। **शुचि:** जो पवित्र रूप हैं। **ऊर्जित:** जो बल के धाम हैं। **अतीन्द्र:** इन्द्र को हराकर जिन्होंने पारिजात वृक्ष का हरण कर लिया था। **संग्रह:** जो भक्तों के लिए ग्रहणीय हैं। **सर्ग:** जो कार्यरूप हैं। **धृतात्मा:** जो अनेक रूपों से आत्मा को धारण करते हैं अथवा जो अनेक रूप धारण करते हैं। **नियम:** जो जगत के प्राणियों को स्वकर्मों में लगानेवाले हैं। **यम:** जो हृदयस्थ होकर प्राणियों को अपने-अपने अधिकार भाव के लिए प्रेरित करते हैं।

वैद्यो वैद्य: सदायोगी वीरहा माधवो मधु:।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबल:॥१८॥

वैद्यो: जो जानने योग्य हैं। **वैद्य:** जो सभी तरह की विद्याओं के जानकार हैं। **सदायोगी:** जो कर्ता होकर भी अकर्ता हैं। **वीरह:** जो राक्षसों के संहारक हैं। **माधव:** जो माधवरूप हैं। **मधु:** जो बसंत ऋतु के समान प्रेम उत्पन्न करनेवाले हैं। **अतीन्द्रय:** जो इंद्रियों से जानने योग्य नहीं हैं। **महामाय:** जो महामायावी हैं। **महोत्साह:** जो अति उत्साहवाले हैं। **महाबल:** जो बालरूप होकर भी महाबलशाली हैं।

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युति:।
अनिर्देश्यवपु: श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक्॥१९॥

महाबुद्धि: जो गहन बुद्धि के हैं। **महावीर्य:** जो अति वीर्यशाली अथवा महापराक्रमी हैं। **महाशक्ति:** जो अतिशक्तिशाली हैं। **महाद्युति:** जो अति शोभाशाली हैं। **अनिर्देश्यवपु:** जो निर्देश देने के योग्य नहीं हैं अर्थात जो किसी के अधीन नहीं हैं। **श्रीमान:** जो ऐश्वर्य से युक्त हैं। **अमेयात्मा:** जो चित्त के विषय नहीं हैं। **महाद्रिधृक:** जिन्होंने समुद्र मंथन के समय मदराचल पर्वत को धारण किया था।

महेष्वासो महीभर्ताम् श्रीनिवास: सतां गति:।
अनिरुद्ध: सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पति:॥२०॥

महेष्वास: जिन्होंने रामावतार में भगवान शिव का धनुष उठाया था। **महीभर्ता:** जो सृष्टि के पोषण-धारणकर्ता हैं। **श्रीनिवास:** जो लक्ष्मी के आश्रय हैं। **संतागति:** जिनके बारे में सद्पुरुषों से ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। **अनिरुद्ध:** जो शत्रुओं के रोकने पर भी रुकनेवाले नहीं हैं अर्थात शत्रु भी उनसे पराजित हो जाते हैं। **सुरानन्द:** जो देवताओं को प्रमुदित करनेवाले हैं। **गोविन्द:** जो गौ, वाणी, इन्द्र के स्वामी हैं। **गोविन्दां पति:** जो वेदवाणी के ज्ञाता और उसकी रक्षा करनेवाले हैं।

मरीचिर्दमनो हंस: सुपर्णो भुजगोत्तम:।
हिरण्यनाभ: सुतपा: पद्मनाभ: प्रजापति:॥२१॥

मरीचिदमन: जो दुष्प्रवृत्ति लोगों का संहार करनेवाले हैं। **हंस:** जो सत्य और असत्य के निर्णय करने में हंस के समान हैं। **सुपर्ण:** जो गरुड़रूप हैं। **भुजगोत्तम:** जो शेषरूप हैं। **हिरण्यनाभ:** जिनकी

नाभि में सुवर्णमय ब्रह्माण्ड है। **सुतपा:** जो श्रेष्ठ तपस्वी हैं। **पद्मनाभ:** जो कमल की नाल के समान गोल नाभिवाले हैं। **प्रजापति:** जो प्रजापति रूप हैं।

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥२२॥

अमृत्युः जो अमर हैं। **सर्वदृक्:** जिनकी सब पर दृष्टि है। **सिंह:** जो सिंह के समान पराक्रमशाली हैं। **सन्धाता:** जो युधिष्ठिर के दूत रूप में संधि करानेवाले हैं। **संधिमान:** जो दौत्य कर्म के करनेवाले हैं। **स्थिर:** जो भक्तों के हृदय में रहते हैं। **अज:** जिन्होंने शिशुपाल के वध के लिए सुदर्शन चक्र धारण किया था। **दुर्मर्षण:** युद्ध में जिनका पराक्रम असहनीय रहता है। **शान्ता:** जो दुष्टों को दण्ड देनेवाले हैं। **विश्रुतात्मा:** जो विराट देहवाले हैं। **सुरारिहा:** जो देवताओं के शत्रु 'नृक' नामक दैत्य का संहार करनेवाले हैं।

गुरुर्गुरुतमो धामः सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥२३॥

गुरुर्गुरुतमो: जो उपदेशकों में सर्वश्रेष्ठ उपदेशक हैं। **सत्य:** जो अबाधित हैं। **सत्यपराक्रम:** जो सामर्थ्यवान हैं। **निमिष:** जो भली प्रकार देखनेवाले हैं। **अनिमिष:** जो अदर्शन धर्मवाले नहीं हैं। **स्रग्वी:** जो वैजयंती माला धारण करते हैं। **वाचस्पतिरुदारधी:** जो वेद वाणी के स्वामी और उदार बुद्धिवाले हैं।

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपादः॥२४॥

अग्रणी: जो सबसे पहले पूजने योग्य हैं। **ग्रामणी:** जो श्रेष्ठ हैं। **श्रीमान:** जो ऐश्वर्य संपन्न हैं। **न्याय:** जो पुराण श्रुति-स्मृति के मर्म को जाननेवाले हैं। **नेता:** कर्म के फलदाता हैं। **समीरण:** जो वार्तालाप करने में चतुर हैं। **सहस्रमूर्द्धा:** जो हजार सिरवाले हैं। **विश्वात्मा:** जो सृष्टि के आत्मरूप हैं। **सहस्राक्ष:** जो हजार आंखों वाले हैं। **सहस्रपाद:** जिनके हजार पैर हैं।

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृत्तः संप्रमर्दनः।
अहर्संवर्तको वन्हिरनिलो धरणीधरः॥२५॥

आवर्तन: धर्म की रक्षार्थ जो कालानुसार पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। **निवृत्तात्मा:** जो विरक्त हैं। **अनिवृत्तात्मा:** जो व्रजगोपनाओं में मन लगानेवाले हैं। **संवृत्त:** जो योगमाया से घिरे हैं। **संप्रमर्दन:** जो दैत्यों का घमंड चूर-चूर करनेवाले हैं। **अहर्संवर्तक:** जो सूर्यरूप से जगत को प्रकाशित करनेवाले हैं। **वन्हि:** जो देवताओं के हवि (हवन में डाले जानेवाली सामग्री) को अग्नि रूप से ग्रहण करनेवाले हैं। **अनिल:** जो वायुरूप हैं। **धरणीधर:** जो धरती को धारण करनेवाले हैं।

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुः जन्हुर्नारायणो नरः॥२६॥

सुप्रसाद: प्रसन्न होने पर जो सबकुछ देनेवाले हैं। **प्रसन्नात्मा:** प्रसन्न होने पर जो भक्तों के सब अपराधों को क्षमा कर देनेवाले हैं। **विश्वधृक:** जो सृष्टि को धारण करते हैं। **विश्वभुक:** जो जगत के पालनहार हैं। **विभु:** जो अनेक रूप धारण करनेवाले हैं। **सत्कर्ता:** जो सत्कर्म करनेवाले हैं। **सत्कृत:** जो पूजित हैं। **साधु:** जो दूसरों के कार्यसाधक हैं। जैसा कि साधु का स्वभाव होता है कि वह परोपकार करता है। **जन्हु:** जो जन्हु रूप हैं अर्थात गंगा का पान करके फिर त्याग करनेवाले हैं। **नारायण:** जल ही जिनका अयन (आश्रय) है, इसलिए वे 'नारायण' हैं। **नर:** जो नररूप हैं।

असंख्येयो ऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥२७॥

असंख्येय: जो अगणनीय हैं। **अप्रमेयात्मा:** जिनको मन और वाणी से जानना कठिन है। **विशिष्ट:** जो सर्वश्रेष्ठ हैं। **शिष्टकृत:** जो आचरणहीनों को भी आचरण सिखानेवाले हैं। **शुचि:** जो पवित्र रूप हैं। **सिद्धार्थ:** जो सिद्ध मनोरथी हैं। **सिद्धसंकल्प:** जो संकल्प सिद्ध करनेवाले हैं। **सिद्धिद:** जो सिद्धिदाता हैं। **सिद्धिसाधन:** जो चार पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) देनेवाले हैं।

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्द्धनो वर्द्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥२८॥

वृषाही: जो द्वादशाहादि यज्ञ करनेवाले हैं। **वृषभ:** जो मनोरथों को पूरा करनेवाले हैं। **विष्णु:** जो विष्णुरूप हैं। **वृषपर्वा:** जो धर्म के द्वारा सहज सुलभ हो जाते हैं। **वृषोदर:** जो धर्म को उदर में धारण किए रहते हैं। **वर्द्धन:** जो भक्तों के थोड़े का भी अधिक करनेवाले हैं। **वर्द्धमान:** भक्तों द्वारा दी गई वस्तु को अपनी माया से बढ़ानेवाले हैं। **विविक्त:** जो पवित्रता के प्रतिरूप हैं। **श्रुतिसागर:** जो वेदों के मूल कारण होने से श्रुति सागर जैसे हैं।

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः॥२९॥

सुभुज: जो सुन्दर भुजाओंवाले हैं। **दुर्धर:** जो विष्णुरूप हैं। **वाग्मी:** जो प्रशस्त वचनी हैं। **महेन्द्र:** जो महान इन्द्र हैं। **वसुद:** जो धन देनेवाले हैं। **वसु:** जो स्वयं धन रूप हैं। **नैकरूप:** जो अनेक रूप धारण करनेवाले हैं। **बृहद्रूप:** वराह रूप से जिन्होंने पृथ्वी को धारण किया था। **शिपिविष्ट:** जो यज्ञरूप हैं। **प्रकाशन:** जिनसे सारी सृष्टि प्रकाशित है।

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः॥३०॥

ओजस्तेजोद्युतिधर: जिन्होंने प्राण बल, प्रताप व कांतियुक्त देह धारण कर रखी है। **प्रकाशात्मा:** जो प्रकाशरूप हैं। **प्रतापन:** जो सूर्यरूप सृष्टि को तपाते हैं। **ऋद्ध:** जो ऐश्वर्यसंपन्न हैं। **स्पष्टाक्षर:** जो प्रणव रूप हैं।

मंत्र: जो मंत्र रूप हैं। चन्द्रांशु: जो चन्द्र-किरणों के समान सुखदायी हैं। भास्करद्युति: जो सूर्य के समान शोभावाले हैं।

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥३१॥

अमृतांशुद्भव: समुद्र-मंथन के समय जिन्होंने चन्द्रमा को उत्पन्न किया था। **भानु:** जो दीप्तिमान हैं। **शशबिन्दु:** जो चन्द्रमा के रूप में औषधियों का पोषण करते हैं। **सुरेश्वर:** जो देवताओं के भी स्वामी हैं। **औषधि:** जो औषध रूप हैं। **जगतसेतु:** जो सृष्टि को सेतु समान करनेवाले हैं। **सत्यधर्म पराक्रम:** जो ज्ञान, गुण व पराक्रम को धारण करते हैं।

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः॥३२॥

भूतभव्यभवन्नाथ: जो तीनों कालों (भूत, वर्तमान व भविष्य) के अधिष्ठाता हैं। **पवन:** जो वायुरूप हैं। **पावन:** जो श्रेष्ठ पवित्ररूप हैं। अनल: जो अग्नि रूप हैं। **कामहा:** जो विषयाभिलाषाओं का विनाश करनेवाले हैं। **कामकृत:** कामरूप प्रद्युम्न को जो पैदा करनेवाले हैं। **कान्त:** जो अति सुन्दर हैं। **काम:** जो जिज्ञासुओं को प्रिय हैं। **कामद:** जो कामनाओं की पूर्ति करनेवाले हैं। **प्रभु:** जो दिव्य रूप हैं।

युगादिकृद्युगावर्त्तः नैकमायो महाशनः।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥३३॥

युगादिकृत: युग (काल) के जो आरम्भकर्ता हैं। **युगावर्त्त:** जो युगों (सत्य युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) का प्रवर्तन करते हैं। **नैकमाय:** जो अनेक रूप धारण करते हैं अर्थात जो मायावी हैं। **महाशन:** जो भोजनभट्ट हैं। **अदृश्य:** जो ज्ञान इन्द्रियों से नहीं जाने जा सकते। **अव्यक्तरूप:** जो सत-चित् व आनन्दरूप हैं। **सहस्रजित:** जो हजारों दैत्यों को जीतनेवाले हैं। **अनन्तजित:** अनन्त असुर भी जिन्हें नहीं जीत सकते हैं।

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत् कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः॥३४॥

इष्ट: जो सर्वपूजित हैं। **विशिष्ट:** जो सबके हृदय में निवास करते हैं। **शिष्टेष्ट:** ज्ञानियों में जो पूज्य हैं। **शिखण्डी:** जो मयूर पंखों को धारण करनेवाले ग्वालरूप हैं। **नहुष:** जो अपनी माया से प्राणियों को संसार के बंधनों में बांधते हैं। **वृष:** जो कामनाओं की पूर्ति करनेवाले हैं। **क्रोधहा:** जो भक्तों के क्रोध का शमन करनेवाले हैं। **क्रोधकृत:** दुष्प्रवृत्तिवाले लोगों पर जो कुपित होते हैं। **कर्ता:** जो कर्तारूप हैं। **क्रोधकृत्कर्ता:** जो क्रोधाविष्ट शत्रुओं के संहारकर्ता हैं। **विश्वबाहु:** जिनकी भुजाएं त्रैलोक्यवर्ती हैं। **महीधर:** जो विष्णुरूप हैं।

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥३५॥

अच्युत: जो सृष्टि में सदा विद्यमान रहनेवाले हैं। **प्रथित:** जो अनेक प्रकार की लीलाएं करके प्रसिद्ध हैं। **प्राण:** जो प्राणरूप हैं। **प्राणद:** जो भक्त की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। **वासवानुज:** जो इन्द्र के लघुभ्राता हैं। **अपांनिधि:** जो समुद्र रूप हैं। **अधिष्ठानम:** जो सृष्टि के नियामक हैं। **प्रमत्त:** जो सदैव सचेत रहते हैं। **प्रतिष्ठित:** जो अपनी ही लीला में लीन रहते हैं।

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः॥३६॥

स्कन्द: वायुरूप से जो शोषण करनेवाले हैं। **स्कन्दधर:** वायु को ही जो धारण किए रहते हैं। **धुर्य:** जो सृष्टि को धारण करनेवाले हैं। **वरद:** जो मनोभिलषित वर प्रदान करनेवाले हैं। **वायुवाहन:** जो गरुड़रूप वाहनवाले हैं। **वासुदेव:** जो वासुदेव के पुत्ररूप हैं। **बृहद्भानु:** जो सूर्य-चन्द्र रूप से किरणों को धारण करते हैं। **आदिदेव:** जो आदिदेव हैं। **पुरन्दर:** जो शत्रुओं के नगरों को नष्ट करनेवाले हैं।

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः॥३७॥

अशोक: जिन्हें किसी प्रकार का शोक नहीं है **तारण:** जो प्रिय भक्तों को भव से तार देनेवाले हैं। **तार:** शिशुपाल जैसे दुष्टजनों को भी जिन्होंने भवसागर से तार दिया था। **शूर:** जो पराक्रमी हैं। **शौरि:** जो पराक्रमशील वंश में पैदा होनेवाले हैं। **जनेश्वर:** जो सृष्टि के सभी जीवों के स्वामी हैं। **अनुकूल:** आत्मरूप से जो सब जीवों में व्याप्त हैं। **शतावर्त:** अनगिनत बार जिन्होंने अवतार धारण किया है। **पद्मी:** जो हाथ में कमल धारण करनेवाले हैं। **पद्मनिभेक्षण:** जिनके नेत्र कमल के समान हैं।

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृतः।
महर्द्धि ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः॥३८॥

पद्मनाभ: जिनकी नाभि कमल-नाल के समान हैं। **अरविन्दाक्ष:** जो कमल के समान नेत्रवाले हैं। **पद्मगर्भ:** जो हृत्कमल में गर्भ सदृश उपास्य हैं। **शरीरभृत:** जो अन्न से शरीर पोषण तथा प्राण से शरीर को धारण करनेवाले हैं। **महर्द्धि:** जो महान सिद्धियोंवाले हैं। **ऋद्ध:** जो माया से विराट हैं। **वृद्धात्मा:** जो पुरातन आत्मावाले हैं। **महाक्ष:** जो महान इंद्रिय स्वरूप हैं। **गरुडध्वज:** जिनकी ध्वजा पर गरुड़ विराजमान हैं।

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिंजयः॥३९॥

अतुल: जो उपमारहित हैं। **शरभ:** जो शोभायमान हैं। **भीम:** जो

दुष्टों के लिए भयरूप हैं। **समयज्ञ:** जिनको समय की पहचान है। **हविर्हरि:** जो हव्य सामग्री को अग्निरूप से ग्रहण करते हैं। **सर्वलक्षणलक्षण्य:** जो सब गुण-ज्ञान से युक्त हैं। **लक्ष्मीवान:** जो लक्ष्मी से युक्त हैं। **समितिंजय:** जो युद्ध विजेता हैं।

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदर: सह:।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशन:॥४०॥

विक्षर: जो क्षयरहित हैं अर्थात जिनका कभी नाश नहीं होता। **रोहित:** जिन्होंने मत्स्यावतार धारण किया था। **मार्ग:** जो श्रुति आदि के द्वारा ही जाने जा सकते हैं। **हेतु:** जो कारणरूप हैं। **दामोदर:** एक बार यशोदा ने जिनको रस्सी द्वारा कमर से बांध दिया था। तब से इनका एक नाम दामोदर पड़ा। **सह:** जो सहनशील हैं। **महीधर:** जिन्होंने पृथ्वी को धारण किया था। **महाभाग:** जो महान यशस्वी हैं। **वेगवान:** जो मन के समान गतिवाले हैं। **अमिताशन:** जो संहारकाल में भी भोजन ग्रहण करनेवाले हैं।

उद्भव: क्षोभणो देव: श्रीगर्भ: परमेश्वर:।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुह:॥४१॥

उद्भव: जो सृष्टि से परे हैं। **क्षोभण:** जो प्रकृति-पुरुष में क्षोभ (विकार) उत्पन्न करनेवाले हैं अथवा स्त्री-पुरुष में जो कामभाव पैदा करते हैं। **देव:** जो देवस्वरूप हैं। **श्रीगर्भ:** जो विभूति (लक्ष्मी) को उदर में धारण करते हैं। **परमेश्वर:** जो महान ईश्वर हैं। **करण:**

क्रिया की सिद्धि में जो कारक हैं। **कारणम्:** जो कारण रूप हैं। **कर्ता:** जो कर्तारूप हैं। **विकर्ता:** जो विशेष कार्यों को करनेवाले हैं। **गहन:** जो अंतर्मुखता के विषय हैं। **गुह:** जो हृदय में गुप्त रूप से निवास करनेवाले हैं।

व्यवसायो व्यवस्थान: संस्थान: स्थानदो ध्रुव:।
परिर्धि: परमस्पष्टस्तुष्ट: पुष्ट: शुभेषण:॥४२॥

व्यवसाय: जो क्रियारूप हैं। **व्यवस्थान:** जो सर्वाश्रय हैं। **संस्थान:** प्रलयकाल में जो सब जीवों के आश्रय कारण हैं। **स्थानद:** जो मुक्तिधाम की प्राप्ति करानेवाले हैं। **ध्रुव:** जो कर्ता होकर भी स्वरूप से स्थिर रहते हैं। **परिर्धि:** जो श्रेष्ठ सिद्धियों के स्वामी हैं। **परमस्पष्ट:** जो मलरहित और महान हैं। **तुष्ट:** जो आनन्दरूप हैं। **पुष्ट:** जो पूर्णब्रह्म हैं। **शुभेषण:** जो सबका शुभ चाहनेवाले हैं।

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनय:।
वीर: शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तम:॥४३॥

राम: योगीजन जिस परमब्रह्म में रमण करते हैं। **विराम:** जिनमें जगत का विलय होता है। **विरज:** जो रजोगुण से रहित हैं। **मार्ग:** जो ब्रह्ममार्ग को बतानेवाले हैं। **नेयो:** जिनका भक्तों के हृदय में निवास है। **नयो:** जो भक्तों से प्राप्त अल्पवस्तु भी ग्रहण कर लेते हैं। **अनय:** जो अभक्तों से प्राप्त अधिक वस्तु भी ग्रहण नहीं करते। **वीर:** जो पराक्रमी हैं। **शक्तिमतां श्रेष्ठ:** शक्तिवानों में जो श्रेष्ठ हैं।

धर्म: जो धर्मस्वरूप हैं। **धर्मविदुत्तम:** धर्म के जानकारों में जो सर्वश्रेष्ठ हैं।

वैकुण्ठ: पुरुष: प्राण: प्राणद: प्रणव: पृथु:।
हिरण्यगर्भ: शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षज:॥४४॥

वैकुण्ठ: जो वैकुण्ठधाम रूप हैं। **पुरुष:** जो पूर्ण पुरुष हैं। **प्राण:** जो वेदों के प्राण स्वरूप हैं। **प्राणद:** जिन्होंने ब्रह्मा को वेद प्रदान किए थे। **प्रणव:** जो प्रणव रूप हैं। **पृथु:** जो राजा पृथु के समान हैं। **हिरण्यगर्भ:** जो श्रेष्ठ बाल रूप हैं। **शत्रुघ्न:** जो दुश्मनों के संहारकर्ता हैं। **व्याप्त:** जो सर्वव्यापी हैं। **वायु:** जो वायुरूप हैं। **अधोक्षज:** जो इंद्रियों के विषय नहीं हैं।

ऋतु: सुदर्शन: काल: परमेष्ठी परिग्रह:।
उग्र संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिण:॥४५॥

ऋतु: जो ऋतुओं में वसंत ऋतुरूप हैं। **सुदर्शन:** जो श्रेष्ठ और दर्शनीय हैं। **काल:** जो कालरूप हैं। **परमेष्ठी:** जो अपने ही धाम में रहनेवाले हैं। **परिग्रह:** जो मुमुक्षुओं (जिज्ञासुओं) के द्वारा जाने जाते हैं। **उग्र:** जो रुद्ररूप हैं। **संवत्सर:** जो कालरूप से भली प्रकार व्याप्त हैं। **दक्ष:** जो निपुण हैं। **विश्राम:** जो कल्पांत में अंतिम आश्रय हैं। **विश्वदक्षिण:** जो प्राणियों के प्रति उदार हैं।

विस्तार: स्थावरस्थाणु: प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधन:॥४६॥

विस्तार: जिनमें जगत का विस्तार होता है। **स्थावरस्थाणु:** जो पंचतत्त्वों (जल, वायु, धरती, आकाश, अग्नि) रूप में स्थायी रूप से स्थित हैं। **प्रमाणम्:** जो प्रमाणरूप हैं अथवा जो सत्य हैं। **बीजमव्ययम:** जो बीजरूप हैं। **अर्थ:** जो प्रार्थना योग्य हैं। **अनर्थ:** जो परमार्थी हैं। **महकोश:** जो आनन्दमय कोश रूप हैं। **महाभोग:** जो सुखराशि हैं। **महाधन:** जो भक्तप्रिय हैं।

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः॥४७॥

अनिर्विण्ण: जो भक्त-हित के लिए सदैव सजग रहते हैं। **स्थविष्ट:** जो अति स्थूल रूप हैं। **भू:** जो सत्तात्मक हैं। **धर्मयूप:** जो धर्म-यज्ञ के यूप (स्तंभ) हैं। **महामख:** जो अनेक यज्ञों के कर्ता हैं। **नक्षत्रनेमि:** जो चन्द्रमा के समान आनन्दायी हैं। **नक्षत्री:** जो शुभ नक्षत्र में देह धारण करनेवाले हैं। **क्षम:** जो क्षमाशील हैं। **क्षाम:** दुखकाल में जो भक्तों द्वारा स्मरण किए जाते हैं। **समीहन:** जो श्रेष्ठ कार्यसाधक हैं।

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रम् सतांगतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम:॥४८॥

यज्ञ: जो यज्ञरूप हैं। **इज्य:** जो पूजनीय हैं। **यज्ञइज्य:** राजसूर्य यज्ञ में जिनकी पूजा की जाती हैं। **महेज्य:** जो महान पूजनीय हैं। **क्रतु:** जो एकसाथ कई क्रियाओं के कर्ता हैं। **सत्रम:** जो सत्पुरुषों के रक्षक हैं। **सतांगति:** जो सज्जनों या साधुजनों के द्वारा जानने के विषय हैं। **सर्वदर्शी:** जो सबको समान भाव से देखते हैं। **विमुक्तात्मा:** जो बंधनरहित हैं। **सर्वज्ञ:** जो सबकुछ जाननेवाले हैं। **ज्ञानमुत्तमम:** ज्ञानियों में जो श्रेष्ठ ज्ञानी हैं।

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृतः
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः॥४९॥

सुव्रत: जो श्रेष्ठ व्रतधारी हैं। **सुमुख:** जो सुन्दर मुखवाले हैं। **सूक्ष्म:** जो सूक्ष्मस्वरूप हैं। **सुघोष:** जो श्रेष्ठ वाणीयुक्त हैं। **सुखद:** जो श्रेष्ठ सुखदायी हैं। **सुहृत:** जो श्रेष्ठ उपकारकर्ता हैं। **मनोहर:** जो मन को मोहनेवाले हैं। **जितक्रोध:** जिन्होंने क्रोध को वशीभूत कर लिया है। **वीरबाहु:** जो समर्थ भुजाओंवाले हैं। **विदारण:** जो नृसिंहरूप से हिरण्यकशिपु का वध करनेवाले हैं।

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृतः।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः॥५०॥

स्वापन: जो निज भक्तों के लिए धनप्रदाता हैं। **स्ववश:** जो स्वजनों (भक्तों) के वशीभूत रहते हैं। **व्यापी:** जो सर्वव्यापक हैं। **नैकात्मा:** जो सभी जीवों में प्रतिबिम्ब रूप से निवास करते हैं। **नैककर्मकृत:** जो अनेक कर्मों के करनेवाले हैं। **वत्सर:** जो पुत्र प्रदाता हैं। **वत्सल:** जो भक्तों से प्रेम करनेवाले हैं। **वत्सी:** जो सबको स्नेह करनेवाले हैं। **रत्नगर्भ:** जो गर्भ में रत्न धारण करनेवाले हैं अर्थात समुद्ररूप हैं। **धनेश्वर:** जो ऐश्वर्यशाली हैं।

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सद्सत्क्षरमक्षरम्।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः॥५१॥

धर्मगुप: जो धर्म के रक्षक हैं। **धर्मकृत:** जो धर्म करनेवाले हैं। **धर्मी:** जो श्रेष्ठ धर्मकर्ता हैं। **सद्सत:** जो सदा सत्य रूप हैं। **क्षरम्:** जो विनाशी हैं। **अक्षरम्:** जो अविनाशी हैं। **अविज्ञाता:** जो ज्ञानस्वरूप हैं। **सहस्रांशु:** जो हजारों किरणों के धारणकर्ता अर्थात सूर्य के समान हैं। **विधाता:** जो धारण, पोषण करनेवाले हैं अथवा जो भाग्य लिखनेवाले हैं। **कृतलक्षण:** जो चेतन स्वरूप हैं।

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः॥५२॥

गभस्तिनेमि: जो सूर्यरूप हैं। **सत्त्वस्थ:** जो सतोगुणों से युक्त हैं। **सिंह:** जो सिंह के समान पराक्रमशाली हैं। भूतमहेश्वर: जो जीवों के स्वामी हैं। **आदिदेव:** जो प्रथम देवरूप हैं। महादेव: जो महान देवस्वरूप हैं। **देवेश:** जो देवों के भी स्वामी हैं। **देवभृत:** जो इन्द्ररूप से देवताओं के भरण-पोषण करनेवाले हैं। गुरु: जो तत्त्वज्ञान के उपदेशक हैं। **देवभृद्गुरु:** जो देवराज इन्द्र के भी उपदेशक हैं।

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥

उत्तर: जो सर्वश्रेष्ठ हैं। **गोपति:** जो गायों के स्वामी हैं। **गोप्ता:** जो गायों के रक्षक हैं। ज्ञानगम्य: जो ज्ञान के विषय हैं। **पुरातन:** जो अति प्राचीन हैं तथा जो सदैव स्थिर रहनेवाले हैं। **शरीरभूतभृत:** जो सृष्टि के जीवों का भरण-पोषण करनेवाले हैं। **भोक्ता:** जो पालनकर्ता हैं। **कपीन्द्र:** सुग्रीव को जिन्होंने वानरों का राजा बनाया था। **भूरिदक्षिण:** जो सरल स्वभाववाले हैं।

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुषोत्तमः।
विनयोजयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः॥५४॥

सोमप: जो सोमलता रस का पान करनेवाले हैं। **अमृतप:** रामावतार काल में जिन्होंने यज्ञों के द्वारा देवताओं को तृप्त किया था। **सोम:** जो चन्द्रमा के समान आनन्ददायी हैं। **पुरुजित:** जो अर्जुन के मामा राजा कुंतिभोज को पराजित करनेवाले हैं। **पुरुषोत्तम:** जो पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं। **विनय:** जो विनम्र हैं अथवा जो विशेष नीतियों के जानकार हैं। **जय:** जो जयरूप हैं। **सत्यसन्ध:** जो सत्यप्रतिज्ञावाले हैं। **दाशार्ह:** जिन्होंने दशार्ह वंश में जन्म लिया था। **सात्वतांपति:** जो वैष्णवों का योग क्षेम करनेवाले हैं।

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः॥५५॥

जीव: जो जीवनदाता हैं। **विनयितासाक्षी:** विनयशील लोगों में जो सत्य, धर्म आदि भावों के साक्षीरूप हैं। **मुकुन्द:** जो मुक्तिदाता हैं। **अमितविक्रम:** जो अतुलित पराक्रमवाले हैं। **अम्भोनिधि:** जो देवोत्पत्ति के कारणरूप हैं। **अनन्तात्मा:** जो सृष्टि में अनेक रूपों से

विद्यमान हैं। **महोदधिशयः** कल्प के अंत में जो महासमुद्र में एकमात्र शयन करनेवाले हैं। **अंतकः** सब जीवों के जो अंतिम आश्रय हैं।

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितऽमित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥५६॥

अजः जो अविनाशी हैं अर्थात जो आदिकाल से ही सृष्टि में व्याप्त हैं। **महार्हः** जो श्रेष्ठ पूजनीय हैं। **स्वाभाव्यः** जो भक्तों के चिंतन योग्य हैं। **जितऽमित्रः** जो शत्रुओं को जीतनेवाले हैं। **प्रमोदनः** जो सबको प्रमुदित करनेवाले हैं। **आनन्दः** जो सुखरासी हैं। **नन्दनः** जो सबको सुख देनेवाले हैं। **नन्दः** जो ऐश्वर्यशाली हैं। **सत्यधर्मा**: जो सत्यधर्मी हैं। **त्रिविक्रमः** जो तीनों लोकों को समभाव से देखते हैं।

महर्षि कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृंगः कृतान्तकृतः॥५७॥

महर्षि कपिलाचार्यः जो महर्षि कपिल रूपधारी हैं। **कृतज्ञः** जो किए हुए को जाननेवाले हैं। **मेदिनीपतिः** जो पृथ्वी के स्वामी हैं। **त्रिपदः** जिनके तीन चरण हैं। **त्रिदशाध्यक्षः** जो देवों के अधिष्ठाता हैं। **महाशृंगः** जो महाप्रभुत्व वाले हैं अथवा मत्स्यावतार के समय जो नाव को अपने शृंग में बांधकर क्रीड़ा करनेवाले हैं। **कृतान्तकृतः** जो दुष्कृत्यों का शमन करनेवाले हैं।

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकांगदीः।
गुह्यो गम्भीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥५८॥

महावराहः जो वराहरूपधारी हैं। **गोविन्दः** जो गायों को चरानेवाले अर्थात ग्वालरूप हैं। **सुषेणः** जो श्रेष्ठ सेनानायक हैं। **कनकांगदीः** जो स्वर्णमय बाजूबन्द को धारण करनेवाले हैं। **गुह्यः** जो परम रहस्य होने के कारण गोपनीय हैं। **गंभीरः** जो गंभीर स्वभाव के हैं। **गहनः** जो गूढ़ ज्ञान के द्वारा ही जाने जाते हैं। **गुप्तः** जो मन-वाणी के विषय नहीं हैं। **चक्रगदाधरः** जो सुदर्शन चक्र और कौमोदकी नामक गदा को धारण किए रहते हैं।

वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥५९॥

वेधाः जो प्रियजनों के हितसाधक हैं। **स्वांगः** भक्तों को जो अपने समान समझते हैं। **अजितः** जो शत्रुओं द्वारा न जीते जा सके। **जितः** जो भक्तों के वशीभूत रहते हैं। **कृष्णः** जिनमें कर्षण (आकर्षण) गुण है या जो कृष्ण वर्ण के हैं। **दृढः** जो स्थिर हैं। **संकर्षणः** जो भक्तों के कष्टों को दूर करते हैं। **अच्युतः** जो अविनाशी हैं। **वरुणः** जो वरुणरूप हैं। **वारुणः** जो नन्द को वरुणलोक से लानेवाले हैं। **वृक्षः** जो सहृदयजनों के लिए कल्पवृक्ष के समान हैं। **पुष्कराक्षः** जो यशोदा द्वारा धमकाए जाने पर नेत्रों में नीर भर लाते हैं। **महामनाः** जो उन्नत मनवाले हैं।

भगवान भगहा नन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥६०॥

भगवानः जो छह ऐश्वर्यों (समय, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य) से युक्त हैं। **भगहा:** कल्पांत में जो ऐश्वर्य का क्षय कर देनेवाले हैं। **आनन्दी:** जो आत्मानन्द में लीन रहनेवाले हैं। **वनमाली:** जो वनमाला को धारण करनेवाले हैं। **हलायुधः** जो हल को शस्त्र के रूप में धारण करनेवाले हैं। **आदित्यः** जो अदिति के पुत्र वामन रूप हैं। **ज्योतिरादित्यः** जो ज्योतिमान सूर्य से भी अधिक प्रकाशवाले हैं। **सहिष्णुर्गतिसत्तम:** जो शरणागत रक्षकों में सर्वश्रेष्ठ हैं तथा जिन्होंने शिशुपाल की सौ गालियां भी सहन की थीं।

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१॥

सुधन्वा: जो शारंग नामक धनुष को धारण करनेवाले हैं। **खण्डरपशु:** जो परशु नामक अस्त्र को धारण करने के कारण परशुराम नाम से भी जाने जाते हैं। **दारुणः** जो दुष्टों के लिए दुखदायी (कठोर) हैं। **द्रविणप्रदः** जो भक्तों को धन देते हैं। **दिवस्पृकः** जिन्होंने वामनावतार धारण कर विराट रूप से स्वर्ग को भी नाप लिया था। **सर्वदृग्व्यासः** जो व्यासरूप से सर्वदर्शी हैं। **वाचस्पतिरयोनिजः** जो विद्या के स्वामी और कोख से जन्म न लेनेवाले हैं।

त्रिसामा सामगः सामः निर्वाणं भेषजं भिषक्।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठाशान्तिः परायणम्॥६२॥

त्रिसामा: जो वेदत्रय से गान किए जाने योग्य हैं। **सामगः** जो ब्रह्मरूप से सामवेद का गायन करनेवाले हैं। **सामः** जो सामवेद रूप ही हैं। **निर्वाणम्:** जो मोक्षरूप हैं। **भेषजम्:** जो औषधिरूप हैं। **भिषक्:** जो भव पार करनेवाली विद्या अर्थात आत्म तत्त्व के उपदेष्टा हैं। **संन्यासकृत:** जो संन्यास लेनेवाले हैं। **शमः** जो ज्ञान के साधनरूप हैं। **शान्तः** जो सुखों के प्रति उदासीन हैं अर्थात शांत स्वरूप हैं। **निष्ठाशांतिः** अविद्या निवृत्ति के बाद सभी जीव कल्पांत में जिनमें वास करते हैं। **परायणम्:** जो मोक्ष धाम हैं।

शुभांग शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥६३॥

शुभांगः जिनके अंग सुन्दर हैं। **शांतिदः** जो शांति देनेवाले हैं। **स्रष्टा:** जो सृष्टि के सृजनकर्ता हैं। **कुमुदः** जो कमल के समान हैं। **कुवलेशयः** जो जल में शयन करते हैं। **गोहितः** जो गौओं के हितकारी हैं। **गौपतिः** जो गौ, पृथ्वी के स्वामी हैं। **गोप्ता:** जो भक्तों के रक्षक हैं। **वृषभाक्षः** जो धर्मरूप नेत्रवाले हैं। **वृषप्रियः** जिन्हें धर्म ही प्रिय है।

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः॥६४॥

अनिवर्ती: जो कर्मशील हैं। **निवृत्तात्मा:** जो विषयों से परे हैं। **संक्षेप्ता:** जिन्होंने वेद को संक्षिप्त कर गीता ग्रंथ में स्थान दिया है। **क्षेमकृतः** जो सृष्टि के कल्याणकर्ता हैं। **शिवः** जो स्मरण करने से कल्याण करते हैं। **श्रीवत्सवक्षा:** जिनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न अंकित है। **श्रीवासः** लक्ष्मी जिनके हृदय में निवास करती हैं। **श्रीपतिः** जो लक्ष्मी के स्वामी हैं। **श्रीमतांवरः** जो देवों में श्रेष्ठ हैं।

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमांल्लोकत्रयाश्रयः॥६५॥

श्रीदः जो श्री (ऐश्वर्य) प्रदाता हैं। **श्रीशः** जो लक्ष्मी के पति हैं। **श्रीनिवासः** जो शोभा के भण्डार हैं। **श्रीनिधिः** जो अतुलित ऐश्वर्य के स्वामी हैं। **श्रीविभावनः** जो कर्मानुसार प्राणियों को फल प्रदान करते हैं। **श्रीधरः** जो लक्ष्मी को धारण करनेवाले हैं। **श्रीकरः** जो स्मरणकर्ता को लक्ष्मी (ऐश्वर्य) प्रदान करते हैं। **श्रेयः** जो श्रेय रूप हैं। **श्रीमानः** जो लक्ष्मी से युक्त हैं। **लोकत्रयाश्रयः** जो तीनों लोकों के एकमात्र आश्रय हैं।

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥६६॥

स्वक्षः जिनके नेत्र सुन्दर हैं। **स्वंगः** जिनके अंग सुन्दर हैं। **शतानन्दः**

जो आनन्दमय हैं। **नन्दि:** जो आनन्द प्रदाता हैं। **ज्योतिर्गणेश्वर:** जो ज्योतिर्गणों के स्वामी हैं। **विजितात्मा:** जो आत्मविजेता हैं। **अविधेयात्मा:** जो किसी के अधीन नहीं हैं। **सत्कीर्ति:** जो श्रेष्ठ यशस्वी हैं। **छिन्नसंशय:** जो संशयहीन हैं।

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७॥

उदीर्ण: जो उदार हैं। **सर्वतश्चक्षु:** जो सब जगह देखनेवाले हैं। **अनीश:** जिनका कोई स्वामी नहीं है अर्थात वह स्वयं ही सबके स्वामी हैं। **शाश्वतस्थिर:** जो देशकाल आदि में सदा स्थिर भाव से रहते हैं। **भूशय:** जो भूमि पर शयन करनेवाले हैं। त्रेतायुग में सीता की खोज करते समय जिन्होंने राम के रूप में समुद्र किनारे की पृथ्वी पर शयन किया था। इसी तरह द्वापर युग में बृज के ग्वाल-बालों के साथ खेलते समय भी जिन्होंने पत्तों की सेज पर शयन किया था। **भूषण:** जो जगत के भूषण रूप हैं। **भूति:** जो सत्ता रूप हैं। **विशोक:** जिन्हें किसी प्रकार का शोक नहीं होता। **शोकनाशक:** जो दुखों के हर्ता हैं।

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥६८॥

अर्चिष्मान: जो सूर्यरूप हैं। **अर्चित:** जो सबके द्वारा पूजित हैं। **कुम्भ:** जो घड़े के समान अपने उदर में सृष्टि को धारण करते हैं। **विशुद्धात्मा:** जिनकी आत्मा निर्विकार है। **विशोधन:** जो पापों का शोधन करनेवाले हैं। **अनिरुद्ध:** जिनको किसी प्रकार की बाधा नहीं है अर्थात जो बाधारहित हैं। **अप्रतिरथ:** युद्ध में जिनके सामने कोई नहीं टिक सकता। **प्रद्युम्न:** जो प्रद्युम्नरूप हैं। **अमितविक्रम:** जिनका पराक्रम अपरिमित है।

कालनेमिनिहा: वीर: शौरि: शूरजनेश्वर:।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेश: केशव: केशिहा हरि:॥६९॥

कालनेमिनिहा: जिन्होंने कालनेमि राक्षस का वध किया था। **वीर:** जो गरुड़ को आज्ञा देनेवाले विष्णु रूप हैं अथवा जो वीर हैं। **शौरि:** जो वासुदेव के पुत्र हैं। **शूरजनेश्वर:** जो श्रेष्ठ योद्धाओं के नायक हैं। **त्रिलोकात्मा:** जो तीनों लोकों के आत्मारूप हैं। **त्रिलोकेश:** जो तीनों लोकों के स्वामी हैं। **केशव:** जो केशव अर्थात विष्णुरूप हैं। **केशिहा:** जिन्होंने 'केशिहा' नामक राक्षस का वध किया था। **हरि:** जो पापों को हरनेवाले हैं।

कामदेवः कामपालः कामी कान्त कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जय॥७०॥

कामदेव: जो रति के पति हैं। **कामपाल:** जो कामनाओं को पूर्ण करनेवाले हैं। **कामी:** जो कामना रूप हैं। **कान्त:** जो ब्रह्म का भी अंत करनेवाले हैं। **कृतागम:** जो वेदों के प्रादुर्भाव के कारण हैं। **अनिर्देश्यवपु:** जो जाति व चिह्न से रहित देहवाले हैं। **विष्णु:** जो

अपने तेज से धरती और आकाश को व्याप्त करनेवाले हैं। **वीर:** जो श्रेष्ठ वीर हैं। **अनन्त:** जो अनेक गुणोंवाले हैं। **धनञ्जय:** जो अर्जुन रूप हैं।

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥७१॥

ब्रह्मण्य: जो ब्रह्मनिष्ठ हैं। **ब्रह्मकृत:** हयग्रीव राक्षस का वध करके जिन्होंने वेदों को उससे प्राप्त किया था। **ब्रह्मा:** जो सृष्टि के रचयिता रूप हैं। **ब्रह्म:** जो आत्मज्ञान रूप हैं। **ब्रह्मविवर्धन:** जो तप की वृद्धि करनेवाले हैं। **ब्रह्मवित्:** जो तत्त्व (आत्मतत्त्व) के ज्ञाता हैं। **ब्राह्मण:** जो वैदिक धर्म के ज्ञाता व प्रर्वतक हैं। **ब्रह्मी:** जो ब्रह्म ज्ञान (तत्त्व) के जानकार हैं। **ब्रह्मज्ञ:** जो जीवरूप से ब्रह्म को जाननेवाले हैं। **ब्राह्मणप्रिय:** ब्राह्मण जिन्हें प्रिय हैं।

महाक्रमी महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥७२॥

महाक्रमी: जो पाद विन्यास (पैरों को बढ़ानेवाले) हैं। **महाकर्मा:** जो वृहद् धर्म के कर्ता हैं। **महातेजा:** जो महान तेजस्वी हैं। **महोरग:** जो श्रेष्ठ सर्प 'वासुकि' हैं। **महाक्रतु:** जिन्होंने रामावतार में अश्वमेध यज्ञ किया था। **महायज्वा:** जो लोकसंग्रह हेतु यज्ञ करनेवाले हैं। **महायज्ञ:** जो महान जप यज्ञ करनेवाले हैं। **महाहवि:** जो महान हवि रूप हैं।

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥७३॥

स्तव्य: जो स्तुति करने योग्य हैं। **स्तवप्रिय:** जिन्हें स्तुति (वंदना) प्रिय है। **स्तोत्रम्:** जो स्तोत्र रूप हैं। **स्तुति:** जो गुणकीर्तन क्रिया रूप हैं। **स्तोता:** जो स्तुति करनेवाले हैं। **रणप्रिय:** जिन्हें कौरव-पांडवों का युद्ध प्रिय है। **पूर्ण:** जो पूर्ण कलाओं से युक्त हैं। **पूरयिता:** जो भक्तों की मनोकामना पूर्ण करनेवाले हैं। **पुण्य:** जो पुण्य रूप हैं। **पुण्यकीर्ति:** जो कीर्तिवान हैं। **अनामय:** जो रोग रहित हैं।

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥७४॥

मनोजव: जो मन की गति के समान वेगवान हैं। **तीर्थकर:** जो विष्णुरूप हैं। **वसुरेता:** जो सुवर्ण प्रिय (तेज) वाले हैं। **वसुप्रदो:** जो धनहर्ता हैं। **वसुप्रदो:** जो धन प्रदाता हैं। **वासुदेव:** जो वासुदेव के पुत्र रूप होने से वासुदेव हैं। **वसु:** जो वसुरूप हैं। **वसुमना:** जो सर्वत्र समान रूप से वास करनेवाले हैं। **हवि:** जो हवन रूप हैं।

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥७५॥

सद्गति: जो सद्गति (मोक्ष) रूप हैं। **सत्कृति:** जो उत्तम क्रियावाले हैं। **सत्ता:** जो अधिष्ठान रूप हैं। **सद्भूति:** जो सद्पुरुषों को ऐश्वर्य

प्रदान करनेवाले हैं। **सत्परायण:** सत्य के प्रति जिनकी निष्ठा है। **शूरसेन:** जो श्रेष्ठ सेना से युक्त हैं। **यदुश्रेष्ठ:** जो यदुवंशियों में श्रेष्ठ हैं। **सन्निवास:** सत्पुरुषों के जो आवास रूप हैं। **सुयामुन:** जो यमुना के सुन्दर तट पर गोप सखाओं के मध्य विद्यमान रहनेवाले हैं।

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोअपराजितः॥७६॥

भूतावास: जो जीवों में आत्मरूप से निवास करते हैं। **वासुदेव:** जो वसुदेव के पुत्र हैं। **सर्वासुनिलय:** जो जीवों के अंतिम आश्रय हैं। **अनल:** जो अग्निरूप हैं। **दर्पहा:** जो प्रतिद्वन्द्वियों के घमंड को समाप्त करनेवाले हैं। **दर्पद:** दुष्ट प्रकृति पुरुषों में जो घमंड का भाव पैदा करनेवाले हैं। **दृप्त:** जो स्वात्मानन्द में लीन रहनेवाले हैं। **दुर्धर:** जो कठिन श्रम से हृदय में धारण किए जाते हैं। **अपराजित:** जो सदैव विजयी रहते हैं।

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥७७॥

विश्वमूर्ति: जो विश्व रूप हैं। **महामूर्ति:** जो सत्-चित, आनन्द रूपवाले हैं। **दीप्तमूर्ति:** जो प्रकाशरूप हैं। **अमूर्तिमान:** जो विग्रहरहित हैं। **अनेकमूर्ति:** जो अनेक रूपोंवाले हैं। **अव्यक्त:** जो प्रत्यक्ष नहीं होते। **शतमूर्ति:** जो सैकड़ों रूपवाले हैं। **शतानन:** जिनके सैकड़ों मुंह हैं।

एको नैकः सर्वः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्।
लोबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥७८॥

एक: जो एक रूप हैं। **नैक:** जो माया से अनेक रूप हैं। **सर्व:** जो यज्ञ में सोम रस का पान करनेवाले हैं। **क:** जो ब्रह्मरूप हैं। **किम:** जो पुरुषार्थरूप हैं। **यत्तत्:** जो भक्तों के हितार्थ सर्वत्र विचरण करनेवाले व लीला रचनेवाले हैं। **पदमनुत्तमम:** जो श्रेष्ठ स्थल कहे जाते हैं। **लोकबंधु:** जो लोगों को हित-अहित का ज्ञान करानेवाले हैं। **लोकनाथ:** जो सृष्टिवासियों के स्वामी हैं। **माधव:** जो लक्ष्मी के पति हैं। **भक्तवत्सल:** जो भक्तों पर दयाभाव रखनेवाले हैं।

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी।
वीरहा विषमः शून्यो धृताशीरचलश्चलः॥७९॥

सुवर्णवर्ण: जो स्वर्ण जैसे रंग वाले हैं। **हेमांग:** जिनका शरीर स्वर्ण के समान कांतिमान है। **वरांग:** जो श्रेष्ठ अंगोंवाले हैं। **चन्दनांगदी:** जो चन्दन तथा बाजूबंद को धारण करनेवाले हैं। **वीरहा:** धर्मरक्षार्थ जो असुरों का नाश करनेवाले हैं। **विषम:** जिनके समान कोई नहीं है। **शून्य:** जो धर्म से रहित हैं। **धृताशी:** जो आशीषों से रहित हैं। **अचल:** जो चलायमान नहीं हैं। **चल:** जो प्राणी रूप से चलायमान हैं।

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधाः धराधरः॥८०॥

अमानी: जो अभिमानरहित हैं। **मानद:** जो भक्तों में अभिमान नहीं आने देते। **मान्य:** जो सबमें पूजित हैं। **लोकस्वामी:** जो तीनों लोकों के स्वामी हैं। **त्रिलोकधृक:** जो तीनों लोकों को धारण करनेवाले हैं। **सुमेधा:** जो श्रेष्ठ बुद्धिवाले हैं। **मेधज:** जो अन्न राशि ग्रहण करने के लिए प्रकट होते हैं। **धन्य:** जो पुण्यवान हैं। **सत्यमेधा:** जो सत्यमेधा वाले हैं। **धराधर:** जो शेष रूप से पृथ्वी को धारण करते हैं।

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैक शृंगो गदाग्रजः॥८१॥

तेजोवृष: जो सूर्य रूप से वृष्टि करनेवाले हैं। **द्युतिधर:** जो कांति को धारण करनेवाले हैं। **सर्वशस्त्रभृतां वर:** जो शस्त्रधारियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। **प्रग्रह:** जो भक्तों की पूजा को भली प्रकार ग्रहण करनेवाले हैं। **निग्रह:** जो दुष्टों का संहार करनेवाले हैं। **व्यग्र:** जो भक्तों के प्रति तत्पर रहते हैं। **नैक शृंग:** जो विष्णुरूप हैं। **गदाग्रज:** जो वेदमंत्रों से प्रथम जायमान हैं।

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चर्तुर्व्यूहश्चतुर्गतिः।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्॥८२॥

चर्तुमूर्ति: जो चार मूर्ति रूप (विराट, हिरण्यगर्भ, ईश, तुरीय ब्रह्म) हैं। **चतुर्बाहु:** जो चार भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए

हैं। **चतुर्व्यूह:** जो चार व्यूहों (शरीर पुरुष, छंद पुरुष, वेद पुरुष व महापुरुष) वाले हैं। **चतुर्गति:** जो चारों वेदों (साम, अथर्व, यज्ञ, ऋग) की गति हैं। **चतुरात्मा:** जो चार अंत:करणवाले हैं अर्थात जिनके मन, बुद्धि, अहंकार चित् ये चार अंत:करण हैं। **चतुर्भाव:** जो चार अवस्थाओं (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास) में निमग्न हैं। **चतुर्वेदवित:** जो चारों वेदों के ज्ञाता हैं। **एकपात्:** जो जगतरूपी एक पैरवाले हैं।

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥८३॥

समावर्त: जो सृष्टिक्रम को चलानेवाले हैं। **अनिवृत्तात्मा:** जो सभी जगह विद्यमान हैं अथवा जो विषयों से परे हैं। **दुर्जय:** जिन्हें जीत पाना कठिन है। **दुरतिक्रमण:** जिनको भेद पाना दुर्लभ है। **दुर्लभ:** जो कठिन भक्ति से ही मिल पाते हैं। **दुर्गम:** जो कठिन हैं। **दुर्ग:** विघ्नों को दूर करने पर भी जो मुश्किल से प्राप्त हो पाते हैं। **दुरावास:** जो हृदय में कठिनता से व्यापते हैं। **दुरारिहा:** जो दुष्प्रवृत्तिवाले लोगों का विनाश करनेवाले हैं।

शुभांगो लोकसारंग सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा: कृतागमः॥८४॥

शुभांग: जो शुभ अंग वाले हैं। **लोकसारंग:** जो देवोपासना में लोक भ्रमर के समान हैं। **सुतन्तु:** जो प्रपंचवाले हैं। **तन्तुवर्धन:** जो प्रपंच (माया) की वृद्धि करनेवाले हैं। **इन्द्रकर्मा:** जो इन्द्र के समान कर्मकर्ता हैं। **महाकर्मा:** जो महान कर्मों को करनेवाले हैं। **कृतकर्मा:** जो कृतकर्म करनेवाले हैं। **कृतागम:** जो चारों पदार्थों के देनेवाले हैं।

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तः सर्वविज्जयी॥८५॥

उद्भव: जो सृष्टि के उत्पत्ति कारण हैं। **सुन्दर:** जो शोभनीय हैं। **सुन्द:** जो करुणाकर हैं। **रत्ननाभ:** जो रत्न-नाभि वाले हैं। **सुलोचना:** जो सुन्दर नेत्रोंवाले हैं। **अर्क:** जो पूजित हैं अर्थात जिनकी पूजा की जाती है। **वासजन:** जो अन्न प्रदान करनेवाले हैं। **शृंगी:** मत्स्यावतार के समय जिन्होंने पृथ्वी को धारण किया था। **जयन्त:** जो विजयशील हैं। **सर्वविज्जयी:** जो सबको जीतनेवाले हैं।

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः॥८६॥

सुवर्णबिन्दु: जो सुन्दर वर्ण के अंगोंवाले हैं। **अक्षोभ्य:** जो विषय-विकारों से क्षुब्ध नहीं होते। **सर्ववागीश्वरेश्वर:** जो वागीश्वरों के भी स्वामी हैं। (ब्रह्मा, बृहस्पति आदि वागीश्वर कहलाते हैं।) **महाह्रदो:** जो महान तीर्थरूप हैं। **महागर्त:** जो

महारथी हैं। **महाभूत:** जो जीवों में सर्वश्रेष्ठ हैं अर्थात ब्राह्मणरूप हैं। **महानिधि:** जो श्रेष्ठ संपत्तिवान हैं।

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।
अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः॥८७॥

कुमुद: जो पृथ्वी का भार हरण कर उसे आनन्दित करनेवाले हैं। **कुन्दर:** जो कुन्दरु पुष्प के समान श्रेष्ठ फलों के दाता हैं। **कुन्द:** जो कुन्द मालाधारी हैं। **पर्जन्य:** जो बादलों के समान तापनाशक हैं। **पवन:** जो वायु के समान वेगवाले हैं। **अनिल:** जिसे किसी की प्रेरणा की कोई आवश्यकता नहीं है। **अमृतांश:** जो अमृत का पान करानेवाले हैं। **अमृतवपु:** जो अमर हैं। **सर्वज्ञ:** जो सब विषयभूतों के जाननेवाले हैं। **सर्वतोमुख:** जिनका सब तरफ मुख है।

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापन।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥८८॥

सुलभ: जो भक्ति करने पर ही मिलते हैं। **सुव्रत:** जो श्रेष्ठ व्रतधारी हैं। **सिद्ध:** जो सिद्ध रूप हैं। **शत्रुजित:** जिन्होंने षडविकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य) को जीत लिया है। **शत्रुतापन:** जो शत्रुओं को पीड़ित करनेवाले हैं। **न्यग्रोध:** जो सर्वभूतों को आवरित करनेवाले हैं। **उदुम्बर:** जो पोषणकर्ता हैं। **अश्वत्थ:** जो कल्प तक स्थिर न रहनेवाले हैं। **चाणूरान्ध्रनिषूदन:** चाणूर और कंस आदि का जिन्होंने नाश किया था।

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तधाः सप्तवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः॥८९॥

सहस्रार्चि: जो हजार किरणोंवाले हैं। **सप्तजिह्व:** जिनकी सात जिव्हाएं (काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, विश्वरुची) हैं। ये सभी अग्नि जिह्वाएं कहलाती हैं। **सप्तैधा:** जिनकी सात समिधाएं हैं। **सप्तवाहन:** जो सात वाहनों वाले सूर्य रूप हैं। (सूर्य की सात किरणें ही उसके सात घोड़े कही जाती हैं।) **अमूर्ति:** जो निराकार हैं। **अनघ:** जो पापरहित हैं। **अचिन्त्य:** जो चिंतन से भी परे के विषय हैं। **भयकृत:** जो दुष्टों के लिए भयरूप हैं। **भयनाशन:** जो भक्तजनों के भय का नाश करनेवाले हैं।

अगणुबृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महानः।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः॥९०॥

अणु: जो सूक्ष्म हैं। **बृहत:** जो वर्धमान हैं अर्थात वृद्धि को प्राप्त होनेवाले हैं। **कृश:** जो ब्रह्म कृश रूप हैं। **स्थूल:** जो अविद्या आदि में स्थूल रूप हैं। **गुणभृत:** जो गुणधर्मों (कल्याण आदि) को धारण करनेवाले हैं। **निर्गुण:** जो गुणधर्म से रहित हैं। **महान:** जो सबके द्वारा पूजित हैं। **अधृत:** जो किसी से भी धारण किए जानेवाले नहीं हैं। **स्वधृत:** जो अपनी ही माया में लिप्त हैं। **स्वास्य:** जो वेदरूपी श्वास से शोभित मुखवाले हैं। **प्राग्वंश:** जिनकी प्रथम उत्पत्ति हुई है। **वंशवर्धन:** जो परीक्षित को जीवनदान देकर पाण्डवों के वंश की वृद्धि करनेवाले हैं।

भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥९१॥

भारभृत: जो शेषनागावतार से पृथ्वी को धारण किए हुए हैं। **कथित:** जो सर्वश्रेष्ठ कहे गए हैं। **योगी:** जो योग विद्या में पारंगत हैं। **योगीश:** जो योगियों के भी ईश्वर (स्वामी) हैं। **सर्वकामद:** जो सभी मनोकामनाएं पूर्ण करनेवाले हैं। **आश्रम:** जो संसार रूपी जंगल में भ्रमण करनेवाले जीवों के लिए आश्रम रूप भी कहे जाते हैं। **श्रमण:** जो भक्त विरोधियों को दुख देनेवाले हैं। **क्षाम:** कल्प के अंत में जो सृष्टि-जीवों को स्वयं में लीन कर लेनेवाले हैं। **सुपर्ण:** जो वेदरूपी श्रेष्ठ पत्तों के समान हैं। **वायुवाहन:** जो वायु के भी प्रेरक हैं।

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डी दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः॥९२॥

धनुर्धर: रामावतार काल में जिन्होंने धनुष धारण किया था। **धनुर्वेद:** धनुष के गुण-अवगुणों के जो ज्ञाता हैं। **दण्ड:** जो दण्ड देनेवाले हैं। **दमयिता:** राजा रूप से जो प्रजा का दमन करनेवाले हैं। **दम:** जो दमरूप हैं। **अपराजित:** जो गोपियों द्वारा जीतनेवाले हैं। **सर्वसह:** जो सबको सहन करनेवाले हैं। **नियन्ता:** जो सृष्टि के नियमनकर्ता हैं। **अनियम:** जो नियम आदि से आबद्ध नहीं हैं। **अयम:** जो अविनाशी हैं अथवा मृत्यु धर्म से रहित हैं।

सत्ववान्सात्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः॥९३॥

सत्ववान: जो सतोगुणी हैं। **सात्विक:** जो शुद्ध सात्विक रूप हैं। **सत्य:** जो सत्य स्वरूप हैं। **सत्यधर्मपरायण:** जो सत्य-धर्म में तत्पर रहनेवाले हैं। **अभिप्राय:** जो संपूर्ण पुरुषार्थ की कामनावालों से अभिलषित हैं। **प्रियार्ह:** जो प्रिय वस्तु के योग्य हैं। **अर्ह:** जो पूजने के योग्य हैं। **प्रियकृत:** जो भक्तों के लिए सुखकारी हैं। **प्रीतिवर्धन:** जो अपने प्रति भक्तों का प्रेमवर्धन करनेवाले हैं।

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः॥९४॥

विहायसगति: जिनकी आकाश में गमन करने जैसी शक्ति है। **ज्योति:** जो ज्योति स्वरूप हैं। **सुरुचि:** जो कांतियुक्त हैं। **हुतभुक:** जो अग्निरूप हैं अर्थात हवन में देवताओं के भाग से जो आहुतियां दी जाती हैं उन्हें अग्निरूप से जो भक्षण करनेवाले हैं। **विभु:** जो सर्वव्यापक हैं। **रवि:** जो शृंगारादि रस ग्रहण करनेवाले हैं। **विरोचन:** जो विशेष रूप से सुशोभित हैं। **सूर्य:** जो आकाशचारी सूर्य रूप हैं। **सविता:** जो जगतोत्पत्ति के कारणरूप भी हैं। **रविलोचन:** सूर्यदेव जिनके नेत्ररूप हैं।

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥९५॥

अनन्त: जो विभूतियों से व्याप्त हैं। **हुतभुक:** हवन में आहुति रूप से प्राप्य पदार्थों का जो सेवन करनेवाले हैं। **भोक्ता:** जो खाद्य पदार्थों का सेवन करनेवाले हैं अथवा कृष्णावतार में जिन्होंने मक्खन आदि का सेवन किया था। **सुखद:** जो सुखदाता हैं। **अनेकज:** जो भक्तों से सुशोभित हैं। **अग्रज:** हिरण्यगर्भ रूप से जो सृष्टि में प्रथम आए इसलिए अग्रज हैं। **अनिर्विण्ण:** जो शिथिल प्रयासवाले नहीं हैं। **सदामर्षी:** जो सहृदयजनों के लिए क्षमाशील हैं। **लोकाधिष्ठानम:** जो तीनों लोकों के अधिष्ठाता हैं। **अद्भुत:** जो शक्तिशाली होने से अद्भुत हैं।

सनात् सनातनमः कपिलः कपिरव्ययः।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः॥९६॥

सनात्: सृष्टि में जो सनातन काल से व्याप्त हैं। **सनातनम:** जो ब्रह्मादि देवताओं के भी आदिकारण हैं। **कपिल:** जो देवहूति के पुत्र कपिल मुनि के रूप में जन्म लेनेवाले हैं। **कपि:** जो वराहरूप हैं। **अव्यय:** जो अविनाशी हैं। **स्वस्तिद:** जो कल्याणरूप हैं। **स्वस्तिकृत:** जो दुष्टों के नाशकर्ता हैं। **स्वस्तिभुक:** जो सहृदयजनों के पालनकर्ता हैं। **स्वस्तिदक्षिण:** जो शीघ्र कल्याण करनेवाले हैं।

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७॥

अरौद्र: जो अरौद्र रूप हैं। **कुण्डली:** जो कुण्डलों के धारणकर्ता हैं। **चक्री:** जिनके हाथों में सुदर्शन चक्र शोभित रहता है। **विक्रमी:** जो पराक्रमी हैं। **ऊर्जितशासन:** जो बलात् शासन करनेवाले हैं। **शब्दातिग:** जो शब्द आदि से भी अलग हैं। **शब्दसह:** जो स्वयं में शब्दार्थ समाए हुए हैं। **शिशिर:** जो सृष्टि के संतापनाशक हैं। **शर्वरीकर:** जो मुक्ति व भोग पदार्थों के प्रदाता हैं।

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥९८॥

अक्रूर: जो सहज प्रकृति के हैं। **पेशल:** जो मन-कर्म-वचन और देह से सुन्दर हैं। **दक्ष:** जो कार्य करने में कुशल हैं। **दक्षिण:** जो सहृदय हैं। **क्षमिणांवर:** क्षमावानों में जो श्रेष्ठ हैं। **विद्वत्तम:** विद्वानों में जो श्रेष्ठ हैं। **वीतभय:** जो भयरहित हैं। **पुण्यश्रवणकीर्तन:** जो नाम सुमिरण व गुणगान से पुण्य वृद्धि करनेवाले हैं।

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्ये दुःस्वप्ननाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः॥९९॥

उत्तारण: जो मुक्तिदाता हैं। **दुष्कृतिहा:** जो दुष्टों का विनाश करनेवाले हैं। **पुण्य:** जो पुण्यकर्ता हैं। **दुःस्वप्ननाशन:** ध्यान करने मात्र से जो बुरे स्वप्न या विकारों को नष्ट कर देनेवाले हैं। **वीरहा:** जो सृष्टि के कालचक्र को नष्ट कर देनेवाले हैं। **रक्षण:** जो भक्तों के रक्षक हैं। **सन्त:** जो संत प्रकृति के हैं अथवा जो ज्ञान और विनय की अभिवृद्धि

के लिए जो इस सृष्टि में संत रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं। **जीवन:** जो जीवनदाता हैं। **पर्यवस्थित:** जो सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त हैं।

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः।
चतुरस्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः॥१००॥

अनन्तरूप: जो अनेक रूपों से सृष्टि में व्याप्त हैं। **अनन्तश्री:** जो अपार संपत्ति से युक्त हैं। **जितमन्यु:** जो मन को वशीभूत कर क्रोध आदि को जीत लेनेवाले हैं। **भयापह:** जो भय को नष्ट कर देनेवाले हैं। **चतुरस्र:** जो कर्मानुसार फल प्रदान करते हैं। **गंभीरात्मा:** जो गंभीर स्वभाव वाले हैं। **विदिश:** जो प्रिय भक्तों को फल प्रदान करते हैं। **व्यादिश:** जो आज्ञादि देनेवाले हैं। **दिश:** जो कर्मादि फलों का वेदोपदेश देनेवाले हैं।

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥१०१॥

अनादि: जो कारणरहित हैं। **भू:** जो पृथ्वी रूप आश्रय हैं। **भुवोलक्ष्मी:** जो शोभनीय हैं। **सुवीर:** जो श्रेष्ठवीर हैं। **रुचिरांगद:** जो सुन्दर बाजूबंद आदि के धारणकर्ता हैं। **जनन:** जो प्रद्युम्न आदि के उत्पत्तिकर्ता हैं। **जनजन्मादि:** जो जन्म लेनेवाले प्राणियों की उत्पत्ति के आदिकारण हैं। **भीम:** जो भीमरूप हैं अर्थात भय के कारणस्वरूप हैं। **भीमपराक्रम:** जो भीषण पराक्रमी हैं।

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः प्रणः॥१०२॥

आधारनिलय: जो पंचभूतों (पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, वायु) के मूलरूप हैं। **अधाता:** जिनका कोई आधार नहीं है या जो आधारहीन हैं। **पुष्पहास:** जो पुष्प (फूल) के समान खिलनेवाले व शीघ्र मुरझा जानेवाले हैं। **प्रजागर:** जो सब विषयों के ज्ञाता हैं। **ऊर्ध्वग:** जो बैकुण्ठधाम में गमन करनेवाले हैं। **सत्पथाचार:** जो स्वयं भी सत्यमार्ग के अनुसरणकर्ता हैं। **प्राणद:** जो प्राणदाता हैं। **प्रणव:** जो प्रणवस्वरूप हैं अथवा जो स्तुत्य हैं। **प्रण:** जो भक्तों से व्यवहारशील हैं अथवा भक्तगण जिनका ध्यान-चिंतन किया करते हैं।

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः॥१०२॥

प्रमाणम: जो साक्षीरूप हैं। **प्राणनिलय:** जो जीवमात्र के प्राणरूप हैं। **प्राणभृत:** जो अन्न रूप से जगत के जीवों की प्राण-रक्षा करते हैं। **प्राणजीवन:** जो जीवों के जीवनाधार हैं। **तत्त्वम:** जो तत्त्व रूप हैं। **तत्त्ववित्:** जो जीवरूप से तत्त्व (आत्म तत्त्व) को जाननेवाले हैं। **एकात्मा:** जो एक आत्मा स्वरूप हैं। **जन्ममृत्युजरातिग:** जो जन्म-मृत्यु-जरा आदि विकारों से परे हैं।

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सपिता प्रपितामहः।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः॥१०४॥

भूर्भुवःस्वस्तरू: जो कल्पवृक्ष के समान तीनों लोकों के जीवों को कर्मानुसार अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। **तार:** जो भक्तों के उद्धार कर्ता हैं। **सपिता:** जो जीवों के पितास्वरूप हैं। **प्रपितामह:** जो ब्रह्म के भी पिता हैं। **यज्ञ:** जो यज्ञस्वरूप हैं। **यज्ञपति:** जो यज्ञ के भी रक्षक हैं। **यज्वा:** जो यज्ञकर्ता हैं। **यज्ञांग:** जो यज्ञ के अंगस्वरूप हैं। **यज्ञवाहन:** जो यज्ञों के फलदाता हैं।

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञीः यज्ञभुग्यज्ञसाधनः।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च॥१०५॥

यज्ञभृत: जो यज्ञधारक हैं। **यज्ञकृत:** जो प्रलयकाल में यज्ञ को नष्ट कर देते हैं। **यज्ञी:** यज्ञकर्ताओं में जा मुख्य हैं। **यज्ञभुक्:** यज्ञों में देवताओं को अर्पित भाग को जो ग्रहण करनेवाले हैं। **यज्ञसाधन:** जो यज्ञ के साधनकर्ता हैं। **यज्ञान्तकृत:** जो त्रिक्रूप साक्षात्कार से यज्ञों का समापन करनेवाले हैं। **यज्ञगुह्यम:** यज्ञ में जिन्हें फलरूप से विद्वान ही जान पाते हैं। **अन्नम:** जो अन्न स्वरूप हैं। **अन्नाद:** जो अन्न प्रदानकर्ता व भोगकर्ता हैं।

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः॥१०६॥

आत्मयोनि: जो आत्मरूप से सृष्टि के कारणरूप हैं। **स्वयंजात:** जो निमित्तरूप हैं। **वैखान:** जो वराहरूप से पाताल में प्रविष्ट होकर हिरण्याक्ष राक्षस का वध करनेवाले हैं। **सामगायन:** जो सामवेद के गायनकर्ता हैं। **देवकीनन्दन:** जो देवकी के पुत्र हैं। **स्रष्टा:** जो सृष्टि के सभी कार्यों को करनेवाले हैं। **क्षितीश:** जो धरती के स्वामी हैं। **पापनाशन:** जो पापों के शमनकर्ता हैं।

शंखभृन्नन्दकी चक्री शारंगधन्वा गदाधरः।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥१०७॥

शंखभृत: जो 'पांचजन्य' नामक शंख को धारण करते हैं। **नन्दकी:** जो 'नन्दक' नामक तलवार को धारण करते हैं। **शारगंधन्वा:** जो शारंग नामक धनुष को धारण करते हैं। **गदाधर:** जो 'कौमोदकी' नामक गदा को धारण करते हैं। **रथांगपाणि:** महाभारत युद्ध में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा करने पर भी भीष्म पितामह द्वारा त्रस्त होकर जिन्होंने रथ के पहिए को चक्र रूप में धारण किया था। **अक्षोभ्य:** शत्रु भी जिन्हें क्षुब्ध (हताहत) नहीं कर सकते। **सर्वप्रहरणायुध:** जो सभी आयुधों (अस्त्रों) के धारणकर्ता हैं।

इतिदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम्॥१०८॥

इस प्रकार महात्मा केशव के कीर्तनीय एक हजार दिव्य नामों का इस स्तोत्र में गुणगान किया गया है।

॥ माहात्म्यम् ॥

यं इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्।
नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः॥१॥

जो विष्णु के एक हजार नामों को नित्य सुनता है अथवा जो गुणगान करता है, वह इस लोक में अथवा परलोक में श्रेष्ठ फलों को भोगता है।

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत्।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात्॥२॥

ब्राह्मण वेदांत का जाननेवाला, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धन पानेवाला बनता है तथा शूद्र सुख भोगता है।

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम्॥३॥

धर्मी धर्म को, धनेच्छु धन को, कामी कामनाओं को तथा राजा इच्छुक प्रजा को प्राप्त करता है।

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्मगमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतांप्रकीर्तयेत्॥४॥

जो प्रिय भक्त शुद्ध होकर भगवान वासुदेव के सहस्रनाम का गुणगान करता है।

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम॥५॥

वह यशस्वी, स्वजाति में प्रधान, स्थिर संपत्तिवाला और मोक्ष को प्राप्त करनेवाला होता है।

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विदन्ति।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः॥६॥

उसे कहीं भी भय नहीं होता। वह वीर्य व तेज (ओज) को प्राप्त करता है और रोगरहित, शोभायुक्त, बल, रूप, गुणों से संपन्न होता है।

रोगार्तो मुच्येत रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः॥७॥

रोगी रोगमुक्त होता है, कैदी कैद से, भयभीत भय से तथा विपत्ति में पड़ा हुआ विपत्ति से मुक्त होता है।

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमः।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः॥८॥

जो प्राणी भक्ति भाव से भगवान पुरुषोत्तम की सहस्रनामों से सदैव स्तुति करता है वह दुखों से मुक्त हो जाता है।

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः।
सर्व पापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्॥९॥

जो मनुष्य भगवान वासुदेव का शरणागत होकर उनमें आसक्ति रखता है, वह पापमुक्त होकर सनातन ब्रह्म को प्राप्त करता है।

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते॥१०॥

भगवान वासुदेव के भक्त को कहीं भी अशुभ की प्राप्ति नहीं होती तथा उसे जन्म, मृत्यु, रोग, व्याधि, भय आदि नहीं सताते।

इमं स्तव मधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
युज्येतात्मसुखक्षान्ति श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः॥११॥

जो श्रद्धा-भक्ति से इस स्तोत्र का पाठ करता है वह आत्मसुख, शांति, लक्ष्मी, बुद्धि, स्मृति, कीर्तिवाला होता है।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मातिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानपुरुषो मे॥१२॥

भगवान पुरुषोत्तम के भक्तों को क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, अशुभ की प्राप्ति नहीं होती।

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रः खं दिशो भूर्महोदधिः।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः॥१३॥

भगवान वासुदेव के बल-पराक्रम से ही द्यु लोक (स्वर्ग), चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र समूह, आकाश, दिशा, पृथ्वी, समुद्र स्थिर हैं।

ससुरासुरगन्धर्वं समयक्षोरगराक्षसम्।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम्॥१४॥

देवता, राक्षस, गंधर्व, किन्नर आदि चराचर जगत भगवान कृष्ण के वशीभूत हैं।

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्वं तेजो बलं धृतिः।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च॥१५॥

पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि, सत्व, तेज, बल धृति, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ आदि सभी भगवान वासुदेव के ही रूप हैं।

सर्वागमानाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः॥१६॥

सब शास्त्रों में आचार (शौच, स्नान, संध्या, वंदनादि) को सर्वोपरि कहा गया है। क्योंकि आचार से धर्म और धर्म से भगवान अच्युत फल प्रदान करते हैं।

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जंगमाजंगम चेदं जगन्नारायणोद्भवम्॥१७॥

ऋषि, पितर, देवता, महाभूत, धातु, जंगम, स्थावर जगत की उत्पत्ति भगवान नारायण से ही है।

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात्॥१८॥

योग, ज्ञान, सांख्य, विद्या, शिल्पादि तथा कर्म, वेद, शास्त्र विज्ञान की उत्पत्ति भगवान जनार्दन से ही हुई है।

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रींल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुग्व्ययः॥१९॥

भगवान विष्णु ही जीवों की आत्मा, सृष्टि के भोगकर्ता व शाश्वत हैं। वह महत् तत्त्व से उत्पन्न और अनेक जीवों, तीनों लोकों को रचकर उसका उपभोग करते हैं।

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च॥२०॥

भगवान विष्णु के इस स्तोत्र की रचना महर्षि वेदव्यासजी ने की है। जो मनुष्य इसको श्रेय व सुख की प्राप्ति के लिए पढ़ता है अथवा पढ़ने की इच्छा मात्र करता है।

विश्वेश्वरम् देवं जगतः प्रभवाप्ययम्॥
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम्॥२१॥

जो जीव विश्वनियंता, देव, जगतोत्पत्ति के कारण तथा नाशकर्ता कमल नयन भगवान का गुणगान करते हैं, वे सृष्टि के दुखों को प्राप्त नहीं करते।

***

श्री विष्णुः सहस्रनामावली

१ विश्वम्
२ विष्णु
३ वषट्कार
४ भूतभव्यभवत्प्रभु
५ भूतकृत
६ भूतभृत्
७ भावः
८ भूतात्मा
९ भावनः
१० पूतात्मा
११ परमात्मा
१२ मुक्तानां परमांगति
१३ अव्यय
१४ पुरुषः
१५ साक्षी
१६ क्षेत्रज्ञः
१७ अक्षरः
१८ योगः
१९ योगविदां नेता
२० प्रधानपुरुषेश्वर
२१ नारसिंहवपु
२२ श्रीमान्
२३ केशवः
२४ पुरुषोत्तम
२५ सर्व
२६ शर्व
२७ शिवः
२८ स्थाणु
२९ भूतादिः
३० निधिरव्यय
३१ सम्भवः
३२ भावनः
३३ भर्त्ता
३४ प्रभवः
३५ प्रभुः
३६ ईश्वरः
३७ स्वयम्भूः
३८ शम्भुः
३९ आदित्यः
४० पुष्कराक्षः
४१ महास्वनः
४२ अनादिनिधनः
४३ धाता
४४ विधाता
४५ धातुरुत्तमः
४६ अप्रमेयः
४७ हृषीकेशः
४८ पद्मनाभः
४९ अमरप्रभुः
५० विश्वकर्माः
५१ मनुः
५२ त्वष्टाः
५३ स्थविष्ठः
५४ स्थविरो ध्रुवः
५५ अग्राह्य
५६ शाश्वतः
५७ कृष्णाः
५८ लोहिताक्षः
५९ प्रतर्दनः
६० प्रभूतः

६१ त्रिककुब्धाम:	७८ विक्रम:	९५ अज:	११२ वृषकर्मा
६२ पवित्रम्	७९ क्रम:	९६ सर्वेश्वर:	११३ वृषाकृति
६३ मंगलं परम्	८० अनुत्तम:	९७ सिद्ध:	११४ रुद्र
६४ ईशान	८१ दुराधर्ष	९८ सिद्धि:	११५ बहुशिरा
६५ प्राणद:	८२ कृतज्ञ	९९ सर्वादि:	११६ ब्रभु
६६ प्राण	८३ कृति:	१०० अच्युत:	११७ विश्वयोनि:
६७ ज्येष्ठ:	८४ आत्मवान्	१०१ वृषाकपि:	११८ शुचिश्रवा:
६८ श्रेष्ठ:	८५ सुरेश:	१०२ अमेयात्मा:	११९ अमृत:
६९ प्रजापति:	८६ शरणम्	१०३ सर्वयोगविनि: सृत:	१२० शाश्वतस्थाणु:
७० हिरण्यगर्भ:	८७ शमं	१०४ वसु	१२१ वरारोह:
७१ भूगर्भ:	८८ विश्वरेता:	१०५ वसुमना	१२२ महातपा:
७२ माधव:	८९ प्रजाभव:	१०६ सत्य:	१२३ सर्वग:
७३ मधुसूदन:	९० अह:	१०७ समात्मा:	१२४ सर्वविद्भानु:
७४ ईश्वर:	९१ संवत्सर	१०८ सम्मित:	१२५ विष्वक्सेन:
७५ विक्रमी:	९२ व्याल:	१०९ सम:	१२६ जनार्दन:
७६ धन्वी:	९३ प्रत्यय:	११० अमोघ:	१२७ वेद:
७७ मेधावी:	९४ सर्वदर्शन:	१११ पुण्डरीकाक्षं	१२८ वेदवि:

१२९ अव्यंग:
१३० वेदांग:
१३१ वेदवित्
१३२ कवि:
१३३ लोकाध्यक्ष
१३४ सुराध्यक्ष
१३५ धर्माध्यक्ष
१३६ कृताकृत:
१३७ चतुरात्मा:
१३८ चतुर्व्यूह:
१३९ चतुष्र्रष्ट्र:
१४० चतुर्भुज
१४१ भ्राजिष्णु
१४२ भोजनम्
१४३ भोक्ता
१४४ सहिष्णु
१४५ जगदादिज:

१४६ अनघ
१४७ विजय
१४८ जेता
१४९ विश्वयोनि
१५० पुनर्वसु
१५१ उपेन्द्र
१५२ वामन
१५३ प्रांशु
१५४ अमोघ
१५५ शुचि
१५६ ऊर्जित
१५७ अतीन्द्र
१५८ संग्रह
१५९ सर्ग
१६० धृतात्मा
१६१ नियम
१६२ यम

१६३ वैद्य
१६४ वैद्या
१६५ सदायोगी
१६६ वीरहा
१६७ माधव
१६८ मधु:
१६९ अतीन्द्रिय
१७० महामाय
१७१ महोत्साह
१७२ महाबल
१७३ महाबुद्धि
१७४ महावीर्य
१७५ महाशक्ति
१७६ महाद्युति
१७७ अनिर्देश्यवपु
१७८ श्रीमान्
१७९ अमेयात्मा

१८० महाद्रिधृक
१८१ महेष्वास:
१८२ महीभर्ता
१८३ श्रीनिवास
१८४ सतांगतिं
१८५ अनिरुद्ध
१८६ सुरानन्द
१८७ गोविन्द
१८८ गोविन्दांपति:
१८९ मरीचि
१९० दमन
१९१ हंस
१९२ सुपर्ण
१९३ भुजगोत्तम
१९४ हिरण्यनाभ
१९५ सुतपा
१९६ पदमनाभ

१९७ प्रजापति
१९८ अमृत्यु
१९९ सर्वदृक्
२०० सिंह:
२०१ संधाता
२०२ संधिमान:
२०३ स्थिर
२०४ अज
२०५ दुर्मर्षण
२०६ शास्ता
२०७ विश्रुतात्मा
२०८ सुरारिहा
२०९ गुरु
२१० गुरुत्तम
२११ धाम
२१२ सत्य
२१३ सत्यपराक्रम

२१४ निमिष
२१५ अनिमिष
२१६ स्रग्वी
२१७ वाचस्पतिरुदारधी:
२१८ अग्रणी
२१९ ग्रामणी
२२० श्रीमान्
२२१ न्याय
२२२ नेता
२२३ समीरण
२२४ सहस्रमूर्धा
२२५ विश्वात्मा
२२६ सहस्राक्ष
२२७ सहस्रपाद:
२२८ आवर्तन
२२९ निवृत्तात्मा
२३० संवृत

२३१ सम्प्रदमर्दन
२३२ अह: संवर्तक
२३३ वन्हि
२३४ अनिल
२३५ धरणीधर
२३६ सुप्रसाद
२३७ प्रसन्नात्मा
२३८ विश्वद्युक
२३९ विश्वभुक्
२४० विभु:
२४१ सत्कर्ता
२४२ सत्कृत
२४३ साधु
२४४ जन्हु
२४५ नारायण
२४६ नर:
२४७ असंख्येय

२४८ अप्रमेयात्मा
२४९ विशिष्ट
२५० शिष्टकृत
२५१ शुचि:
२५२ सिद्धार्थ
२५३ सिद्धसंकल्प
२५४ सिद्ध:
२५५ सिद्धसाधन
२५६ वृषाही
२५७ वृषभ:
२५८ विष्णु:
२५९ वृषपर्वा
२६० वृषोदर
२६१ वर्द्धन
२६२ वर्द्धमान
२६३ विविक्त
२६४ श्रुतिसागर

२६५ सुभुज
२६६ दुर्धर
२६७ वाग्मी
२६८ महेन्द्र
२६९ वसुद
२७० वसु
२७१ नैकरूप
२७२ बृहद्रूप
२७३ शिपिविष्ट
२७४ प्रकाशन
२७५ ओजस्तेजोद्युतिधर
२७६ प्रकाशात्मा
२७७ प्रतापन
२७८ ऋद्ध
२७९ स्पष्टाक्षर
२८० मन्त्रः
२८१ चन्द्रांशु
२८२ भास्करद्युति
२८३ अमृतांशूद्भव
२८४ भानु
२८५ शशबिन्दु
२८६ सुरेश्वरः
२८७ औषधाम्
२८८ जगतः सेतु
२८९ सत्यधर्मपराक्रम
२९० भूतभव्यभवन्नाथ
२९१ पवन
२९२ पावन
२९३ अनल
२९४ कामहा
२९५ कामकृत्
२९६ कान्त
२९७ काम
२९८ कामद

२९९ प्रभुः	३१६ विश्वबाहु	३३३ बृहद्भानु	३५० महर्द्धि
३०० युगादिकृत	३१७ महीधर	३३४ आदिदेव	३५१ ऋद्धः
३०१ युगावर्त	३१८ अच्युत	३३५ पुरन्दर	३५२ वृद्धात्मा
३०२ नैकमाय	३१९ प्रथित	३३६ अशोक	३५३ महाक्ष
३०३ महाशन	३२० प्राण	३३७ तारण	३५४ गरुड़ध्वज
३०४ अदृश्यः	३२१ प्राणदः	३३८ तार	३५५ अतुल
३०५ व्यक्तरूप	३२२ वासवानुज	३३९ शूर	३५६ शरभ
३०६ सहस्रजित्	३२३ अपांनिधि	३४० शौरि	३५७ भीम
३०७ अनन्तजित्	३२४ अधिष्ठिनम्	३४१ जनेश्वर	३५८ समयज्ञ
३०८ इष्ट	३२५ अप्रमत्त	३४२ अनुकूल	३५९ हविर्हरि
३०९ अविशिष्ट	३२६ प्रतिष्ठित	३४३ शतावर्त	३६० सर्वलक्षणलक्षण्य
३१० शिष्टेष्ट	३२७ स्कन्द	३४४ पद्मी	३६१ लक्ष्मीवान्
३११ शिखण्डी	३२८ स्कन्दधर	३४५ पद्निभेक्षण	३६२ समितिंजय
३१२ नहुष	३२९ धुर्य	३४६ पद्मनाभ	३६३ विक्षर
३१३ वृष	३३० वरद	३४७ अरविन्दाक्ष	३६४ रोहित
३१४ क्रोधहा	३३१ वायुवाहन	४८ पद्मनमगर्भ	३६५ मार्ग
३१५ क्रोधकृत्कर्ता	३३२ वासुदेव	३४९ शरीरभृत्	३६६ हेतु

३६७ दामोदर
३६८ सहः
३६९ महीधर
३७० महाभाग
३७१ वेगवान्
३७२ अमिताशन
३७३ उद्भव
३७४ देव
३७५ श्रीगर्भ
३७६ परमेश्वर
३७७ करणम्
३७८ कर्ता
३७९ विकर्ता
३८० गहन
३८१ गहन
३८२ गुह
३८३ व्यवसाय
३८४ व्यवस्थान
३८५ संस्थान
३८६ स्थानद
३८७ ध्रुव
३८८ परर्द्धि
३८९ परमस्पष्ट
३९० तुष्ट
३९१ पुष्ट
३९२ शुभेक्षण
३९३ रामः
३९४ विरामः
३९५ विरज
३९६ मार्ग
३९७ नेय
३९८ नय
३९९ अनय
४०० वीरः

४०१ शक्मितां श्रेष्ठ
४०२ धर्म
४०३ धर्मविदुत्तम
४०४ बैकुण्ठ
४०५ पुरुष
४०६ प्राण
४०७ प्राणद
४०८ प्रणव
४०९ पृथु
४१० हिरण्यगर्भ
४११ शत्रुघ्न
४१२ व्याप्त
४१३ वायु
४१४ अधोक्षज
४१५ ऋतु
४१६ सुदर्शन
४१७ काल
४१८ परमेष्ठी
४१९ परिग्रह
४२० उग्र
४२१ संवत्सर
४२२ दक्ष
४२३ विश्राम
४२४ विश्वदक्षिण
४२५ विस्तार
४२६ विस्तारकर्ता
४२७ स्थावरस्थाणु
४२८ प्रमाणम्
४२९ बीजमव्ययम्
४३० अर्थ
४३१ अनर्थ
४३२ महाकोश
४३३ महाभोग
४३४ महाधन

४३५ अनिर्विण्ण
४३६ स्थविष्ठ
४३७ अभू
४३८ धर्मयूप
४३९ महामख
४४० नक्षत्रनेमि
४४१ नक्षत्री
४४२ खम
४४३ क्षम
४४४ समीहन
४४५ यज्ञ
४४६ इज्य
४४७ महेज्य
४४८ कृतु
४४९ सत्रम्
४५० सतांगति
४५१ सर्वदर्शी
४५२ विमुक्तात्मा
४५३ सर्वज्ञ
४५४ ज्ञानमुत्तमम्
४५५ सुव्रत
४५६ सुमुख
४५७ सूक्ष्म
४५८ सुघोष
४५९ सुखद
४६० सुहृद
४६१ मनोहर
४६२ जितक्रोध
४६३ वीरबाहु
४६४ विदारण
४६५ स्वापन
४६६ स्ववश
४६७ व्यापी
४६८ नैकात्मा

४६९ नैककर्मकृत्
४७० वत्सर
४७१ वत्सल
४७२ वत्सी
४७३ रत्नगर्भ
४७४ धनेश्वर
४७५ धर्मगुप्
४७६ धर्मकृत्
४७७ धर्मी
४७८ सदसत्
४७९ असत्
४८० क्षरमं
४८१ अक्षरम
४८२ अविज्ञात
४८३ सहस्रांशु
४८४ विधाता
४८५ कृतलक्षण
४८६ गभस्तिनेमि
४८७ सत्त्वस्थ
४८८ सिंह
४८९ भूतमहेश्वरः
४९० आदिदेव
४९१ महादेव
४९२ देवेश
४९३ देवभृद्गुरु
४९४ उत्तर
४९५ गोपति
४९६ गोप्ता
४९७ ज्ञानगम्य
४९८ पुरातन
४९९ शरीर भूतभृत्
५०० भोक्ता
५०१ कपीन्द्र
५०२ भूरिदक्षिण

५०३ सोमप
५०४ अमृतप
५०५ सोम
५०६ पुरुजित
५०७ पुरुषोत्तम
५०८ विनय
५०९ जय
५१० सत्यसंध
५११ दाशार्ह
५१२ सात्वतां पति
५१३ जीव
५१४ विनयिता साक्षी
५१५ मुकुन्द
५१६ अमितविक्रम
५१७ अम्भोनिधि
५१८ अन्तक
५१९ अनन्तात्मा

५२० महोदधिशय
५२१ अज
५२२ महार्ह
५२३ जितामित्र
५२४ प्रमोदन
५२५ आनंद
५२६ नन्दन
५२७ नन्द
५२८ कृष्ण:
५२९ त्रिविक्रम
५३० महर्षि
५३१ कृतज्ञ
५३२ मेदिनीपति
५३३ त्रिपद
५३४ त्रिदशाध्यक्ष
५३५ महाश्रृंग
५३६ कृतान्तकृत्

५३७ महावराह	५५४ पुष्कराक्ष	५७१ वाचस्पतिरयोनिज	५८८ कुवलेशय
५३८ गाविंद	५५५ महामना	५७२ त्रिसामा	५८९ गोहित
५३९ सुषेण	५५६ भगवान्	५७३ सामग	५९० गोपति
५४० कनकांगदी:	५५७ भगहा	५७४ साम	५९१ गोप्ता
५४१ गुह्य	५५८ आनन्दी	५७५ निर्वाणम्	५९२ वृषभनाभ
५४२ गंभीर:	५५९ वनमाली	५७६ भेषजम्	५९३ गोप्ता
५४३ गहन	५६० हलायुध:	५७७ भिषकं	५९४ वृषभाक्ष
५४४ गुप्त:	५६१ आदित्य	५७८ संन्यासकृत	५९५ वृषप्रिय
५४५ चक्रधर	५६२ ज्योतिरादित्य	५७९ शम	५९६ अनिवर्ती
५४६ मेधा	५६३ सहिष्णु	५८० शांत	५९७ निवृत्तात्मा
५४७ स्वांग	५६४ गतिसत्तम	५८१ निष्ठा	५९८ संक्षेप्ता
५४८ अजित	५६५ सुधन्वा	५८२ शांति	५९९ क्षेमकृत्
५४९ कृष्ण	५६६ खण्डपरशु	५८३ परायणम्	६०० शिव:
५५० दृढ़	५६७ दारुण	५८४ शुभांग	६०१ श्रीवत्सवक्ष
५५१ संकर्षणोऽच्युत	५६८ द्रविणप्रद	५८५ शान्तिद:	६०२ श्रीवास
५५२ वरुण	५६९ दिंवस्पृक्	५८६ स्रष्टा	६०३ श्रीपति
५५३ वृक्ष	५७० सर्वदृग्व्यास	५८७ कुमुद	६०४ श्रीमतां वर:

६०५ श्रीदः
६०६ श्रीशः
६०७ श्रीनिवास
६०८ श्रीनिधि
६०९ श्रीविभावन
६१० श्रीधर
६११ श्रीकर
६१२ श्रेय
६१३ श्रीमान्
६१४ लोकत्र्याश्रय
६१५ स्वक्ष
६१६ स्वङ्ग
६१७ शतानन्द
६१८ नन्दी
६१९ ज्योतिर्गणेश्वर
६२० विजितात्मा
६२१ अविधेयात्मा
६२२ सत्कीर्ति
६२३ छिन्नसशंय
६२४ उदीर्ण
६२५ सर्वतश्चक्षु
६२६ अनीश
६२७ शाश्वतस्थिर
६२८ भूशय
६२९ भूषण
६३० भूति
६३१ विशोक
६३२ शोकनाशन
६३३ अर्चिष्मान्
६३४ अर्चित
६३५ कुम्भ
६३६ विशुद्धात्मा
६३७ विशोधनः
६३८ अनिरुद्ध
६३९ अप्रतिरथ
६४० प्रद्युम्न
६४१ अमितविक्रम
६४२ कालनेमिनिहा
६४३ वीर
६४४ शौरि
६४५ शूरजनेश्वर
६४६ त्रिलोकात्मा
६४७ त्रिलोकेश
६४८ केशव
६४९ केशिहा
६५० हरि
६५१ कामदेव
६५२ कामपाल
६५३ कामी
६५४ कान्त
६५५ कृतागम
६५६ अनिर्देश्यवपु
६५७ विष्णु
६५८ वीरः
६५९ अनन्त
६६० धनंजय
६६१ ब्रह्मण्य
६६२ ब्रह्मकृत्
६६३ ब्रह्मा
६६४ ब्रह्म
६६५ ब्रह्मविर्धनः
६६६ ब्रह्मवित्
६६७ ब्राह्मण
६६८ ब्रह्मी
६६९ ब्रह्मज्ञ
६७० ब्राह्मणप्रिय
६७१ महाक्रमी
६७२ महाकर्मा

६७३ महातेजा
६७४ महोरग
६७५ महाक्रतु
६७६ महायज्वा
६७७ महायज्ञ
६७८ महाहवि
६७९ स्तव्य
६८० स्तवप्रिय
६८१ स्तोत्रम्
६८२ स्तुति
६८३ स्तोता
६८४ रणप्रिय
६८५ पूर्ण
६८६ पूरयिता
६८७ पुण्य
६८८ पुण्यकीर्ति
६८९ अनामय
६९० मनोजवं
६९१ तीर्थकरः
६९२ वसुरेता
६९३ वसुप्रदो
६९४ वसुप्रदः
६९५ वासुदेव
६९६ वसु
६९७ वसुमना
६९८ हवि
६९९ सद्‌गति
७०० सत्कृति
७०१ सत्ता
७०२ सद्‌भृति
७०३ सत्यपरायण
७०४ शूरसेन
७०५ यदुश्रेष्ठ
७०६ सन्निवास
७०७ सुयामुन
७०८ भूतावास
७०९ वासुदेव
७१० सर्वासुनिलय
७११ अनलः
७१२ दर्पहा
७१३ दर्पद
७१४ दृप्त
७१५ दुर्धर
७१६ अपराजित
७१७ विश्वमूर्ति
७१८ महामूर्ति
७१९ दीप्तमूर्ति
७२० अमूर्तिमान
७२१ अनेकमूर्ति
७२२ अव्यक्त
७२३ शतमूर्ति
७२४ शतानन
७२५ एक
७२६ नैक
७२७ सव
७२८ कः
७२९ किम्
७३० यत्
७३१ तत्
७३२ पद्मनुत्तमम्
७३३ लोकबन्धु
७३४ लोकनाथ
७३५ माधव
७३६ भक्तवत्सल
७३७ सुवर्णवर्ण
७३८ हेमांग
७३९ वरांग
७४० चन्दनांगदी

७४१ वीरहा
७४२ विषम
७४३ शून्य
७४४ धृताशी
७४५ अचल
७४६ चल
७४७ अमानी
७४८ मानद
७४९ मान्य
७५० लोकस्वामी
७५१ त्रिलोकधृक्
७५२ सुमेधा
७५३ मेधज
७५४ धन्य
७५५ सत्यमेधा
७५६ धराधर
७५७ तेजोवृष
७५८ द्युतिधर
७५९ प्रग्रह
७६० सर्वशस्त्रभृतांवर
७६१ निग्रह
७६२ व्यग्र
७६३ नैकश्रृंग
७६४ गदाग्रज
७६५ चतुर्मूर्ति
७६६ चतुर्बाहु
७६७ चतुर्व्यूह
७६८ चतुर्गति
७६९ चतुरात्मा
७७० चतुर्भाव:
७७१ चतुर्वेदवित्
७७२ एकपात्
७७३ समावर्त
७७४ निवृत्तात्मा
७७५ दुर्जय
७७६ दुरातिक्रमः
७७७ दुर्लभ
७७८ दुर्गम
७७९ दुर्ग
७८० दुरावास
७८१ दुरारिहा
७८२ शुभांग
७८३ लोकसारंग
७८४ सुतन्तु
७८५ तन्तुवर्धन:
७८६ इन्द्रकर्मा
७८७ महाकर्मा
७८८ कृतकर्मा
७८९ कृतागम
७९० उद्भव
७९१ सुन्द
७९२ सुन्दरः
७९३ रत्ननाभ
७९४ सुलाचना
७९५ अर्क
७९६ वाजसन
७९७ शृंगी
७९८ जयन्त
७९९ सर्वविज्जयी
८०० सुवर्णाबिन्दु
८०१ अक्षोभ्य
८०२ सर्ववागीश्वरेश्वर
८०३ महाह्रद
८०४ महागर्त
८०५ महाभूत
८०६ महानिधि
८०७ कुमुद
८०८ कुन्दरः

८०९ कुन्द
८१० पर्जन्य
८११ पावन
८१२ अनिल
८१३ अमृतांशु
८१४ अमृतवपु
८१५ सर्वज्ञ
८१६ सर्वतोमुख
८१७ सुलभ
८१८ सुव्रत
८१९ सिद्ध
८२० शत्रुजित्
८२१ शत्रुतापन
८२२ न्यग्रोध
८२३ उदुम्बर
८२४ अश्वत्थ
८२५ चाणूरान्ध्रनिपून्न:

८२६ सहस्रार्चि
८२७ सप्तजिव्ह:
८२८ सप्तैधा:
८२९ सप्तवाहन:
८३० अमूर्ति
८३१ अनघ
८३२ अचिन्त्य
८३३ भयकृत
८३४ भयनाशन
८३५ अणु
८३६ बृहत्
८३७ कृश
८३८ स्थूल
८३९ गुणभृत्
८४० निर्गुण:
८४१ महान्
८४२ अधृत

८४३ स्वधृत:
८४४ स्वस्य
८४५ प्राग्वंश
८४६ वंशवर्धन
८४७ भारभृत्
८४८ कथित
८४९ योगी
८५० योगीश
८५१ सर्वकामद
८५२ आश्रम
८५३ श्रमण
८५४ क्षाम
८५५ सुपर्ण
८५६ वायुवाहन
८५७ धनुर्धर
८५८ धनुर्वेद
८५९ दण्ड

८६० दमयिता
८६१ दम:
८६२ अपराजित
८६३ सर्वसह
८६४ नियन्ता
८६५ अनियम
८६६ अयम
८६७ सत्त्ववान्
८६८ सात्विक
८६९ सत्य
८७० सत्यधर्मपरायण
८७१ अभिप्राय
८७२ प्रियार्ह
८७३ अर्ह
८७४ प्रियकृत्
८७५ प्रीतिवर्धन
८७६ विहायसगति

८७७ ज्योति
८७८ सुरुचि
८७९ हतभुक्
८८० विभु
८८१ रवि
८८२ विरोचन
८८३ सूर्य
८८४ सविता
८८५ रविलोचन
८८६ अनन्त
८८७ अन्त
८८८ भोक्ता
८८९ सुखद
८९० अनेकज
८९१ अग्रज
८९२ अनिर्विण्ण
८९३ सदामर्षी
८९४ लोकाधिष्ठानम्
८९५ अद्भुत
८९६ सनात्
८९७ सनातनतम्
८९८ कपिल
८९९ कपि
९०० अव्यय
९०१ स्वस्तिद
९०२ स्वस्तिकृत्
९०३ स्वस्ति
९०४ स्वस्तिभृक्
९०५ स्वस्तिदक्षिण
९०६ अरौद्र
९०७ कुंडली
९०८ चक्री
९०९ विक्रमी
९१० ऊर्जितशासन
९११ शब्दातिग
९१२ शब्दसह
९१३ शिशिर
९१४ शर्वरीकर
९१५ अक्रूर
९१६ पेशल
९१७ दक्ष
९१८ दक्षिण
९१९ क्षमिणांवर
९२० विद्वत्तम
९२१ वीतभय
९२२ पुण्य श्रीवणकीर्तन
९२३ उत्तारण
९२४ दुष्कृतिहा
९२५ पुण्य
९२६ दुःस्वप्ननाशन
९२७ वीरहा
९२८ वीरहा
९२९ रक्षण
९३० सन्त
९३१ जीवन
९३२ पर्यवस्थित
९३३ अनन्तरूप
९३४ अनन्तश्री
९३५ जितमन्यु
९३६ भयापह
९३७ चतुरस्र
९३८ गंभीरात्मा
९३९ विदिश
९४० व्यादिश
९४१ दिश
९४२ अनादि
९४३ भूर्भूवः
९४४ लक्ष्मीः

९४५ सुवीर
९४६ रुचिरांगद
९४७ जनकः
९४८ जनजन्मादि
९४९ भीम
९५० भीमपराक्रमः
९५१ आधारनिलय
९५२ अधाता
९५३ पुष्पहास
९५४ प्रजागर
९५५ ऊर्ध्वर्ग
९५६ सत्पथाचार
९५७ प्राणद
९५८ प्रणः
९५९ प्रणाणम्
९६० प्राणनिलय
९६१ प्राणभूत
९६२ प्राणजीवन
९६३ तत्त्वम्
९६४ तत्वत्
९६५ एकात्मा
९६६ जन्ममृत्युजरातिग
९६७ भूर्भुवःस्वस्तरूः
९६८ तार
९६९ सविता
९७० प्रपितामह
९७१ यज्ञ
९७२ यज्ञपति
९७३ यज्वी
९७४ यज्ञांग
९७५ यज्ञवाहन
९७६ यज्ञभृत्
९७७ यज्ञकृत्
९७८ यज्ञी
९७९ यज्ञभुक्
९८० यज्ञसाधन
९८१ यज्ञान्तकृत्
९८२ यज्ञगुह्यम
९८३ अन्नम्
९८४ अन्नाद्
९८५ आत्मयोनि
९८६ स्वयंजात
९८७ वैखान
९८८ सामगायन
९८९ देवकीनन्दन
९९० स्रष्टा
९९१ क्षितीश
९९२ पापनाशन
९९३ शंखभृत्
९९४ नन्दकी
९९५ चक्री
९९६ शार्गंधन्वाः
९९७ गदाधरः
९९८ रथागपाणि
९९९ अक्षोभय
१०००सर्वप्रहरणायुध

■ ■